ISSN-2321-3981
सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

भाद्रपद २०८१ सितम्बर २०२४
₹ ३०

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

अब मिलेगी समय पर सहायता...

सड़क, औद्योगिक दुर्घटना और प्राकृतिक आपदा की स्थिति में नि:शुल्क वायु परिवहन सेवा

पीएमश्री

एयर एम्बुलेंस सेवा

संचालन प्रारंभ

"हमारी सरकार प्रदेश की जनता को सर्वोत्तम स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराते हुए स्वस्थ मध्यप्रदेश के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संकल्पित है। अब प्रदेश में गंभीर रोगियों को पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा के जरिए उचित समय पर बेहतर इलाज मिल सकेगा"

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

योजना के बारे में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : 9111777858

सशुल्क एयर एम्बुलेंस सेवा भी उपलब्ध, सम्पर्क करें : 0755-4092530

- आयुष्मान कार्ड धारक को प्रदेश व देश में कहीं भी इलाज हेतु शासकीय और आयुष्मान सम्बद्ध अस्पताल में नि:शुल्क सुविधा
- आयुष्मान कार्ड धारक न होने पर प्रदेश के शासकीय अस्पतालों में नि:शुल्क परिवहन सुविधा जबकि प्रदेश के बाहर निर्धारित शुल्क पर परिवहन सुविधा
- सड़कों या औद्योगिक स्थलों पर होने वाली दुर्घटना, हृदय रोगी या जहर से प्रभावित व्यक्ति को अब मिल सकेगा अच्छे चिकित्सा संस्थानों में समय पर इलाज
- अस्पताल द्वारा मरीज की स्थिति की गंभीरता की जांच के उपरांत मिल सकेगी एयर एम्बुलेंस की सुविधा

एयर एम्बुलेंस सेवा की अनुमति

- दुर्घटना प्रकरण में संभाग के अंदर जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी की अनुशंसा पर जिला कलेक्टर द्वारा
- दुर्घटना अथवा अन्य आपदा की स्थिति में संभाग के बाहर परिवहन हेतु संभागीय आयुक्त द्वारा
- दुर्घटना के अतिरिक्त अन्य गंभीर प्रकरणों में प्रदेश के अंदर संबंधित चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाता की अनुशंसा पर संभागीय आयुक्त द्वारा
- प्रदेश के बाहर गंभीर रोगी या दुर्घटना पीड़ित आयुष्मान कार्डधारी होने पर संचालक चिकित्सा शिक्षा द्वारा
- सशुल्क परिवहन हेतु एन.एच.एम. कार्यालय स्तर पर अनुमति मिलेगी

- रोगी/पीड़ित को एयर एम्बुलेंस तक पहुंचाने के लिए संजीवनी 108 एम्बुलेंस होगी उपलब्ध
- एयर एम्बुलेंस सेवा में हृदय रोग, श्वास और तंत्रिका संबंधी बीमारियों, नवजात शिशुओं की स्वास्थ्य समस्याएं, उच्च जोखिम वाले गर्भधारण तथा आपदा की स्थिति को संभालने के लिये प्रशिक्षित चिकित्सक और पेरा मेडिकल स्टाफ रहेगा मौजूद
- हवाई परिवहन के दौरान रोगी/पीड़ित के लिए ₹ 50 लाख के दुर्घटना बीमा का प्रावधान

म.प्र. शासन

R. O. No. D16017/24

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

भाद्रपद २०८१ • वर्ष ४५
सितम्बर २०२४ • अंक ०३

संरक्षक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

हम जितने भी काम करना चाहते हैं जो भी लक्ष्य पाना चाहते हैं उस सबके लिए हमारा शरीर ही सबसे बड़ा साधन है। इसलिए हम सभी चाहते हैं कि हमारा शरीर सदैव स्वस्थ रहे। लेकिन शरीर स्वस्थ और मन या चित्त अस्वस्थ रहे तो भी लक्ष्य प्राप्ति कठिन हो जाती है। इसलिए तन, मन और बुद्धि स्वस्थ रहे यह हमारी इच्छा रहती है।

इस 'स्वस्थ' शब्द पर जरा सोचिए 'स्व' यानि अपना 'स्थ' यानि स्थिर रहना। 'स्वस्थ' का अर्थ हुआ अपने में रहना। इसी से 'स्वास्थ्य' शब्द बना और स्वास्थ्य ही आनंदकारक है। लेकिन स्वस्थ शब्द केवल तन-मन के साथ ही नहीं जुड़ा है। हम कहते हैं स्वस्थ समाज, स्वस्थ लोकतंत्र, स्वस्थ पर्यावरण अर्थात् स्वस्थ शब्द के अर्थ बड़े व्यापक हैं। 'स्थ' तो उसकी अवस्था है पर 'स्व' ही मुख्य है। स्वदेश, स्वतंत्र, आदि शब्दों पर ध्यान देने से 'स्व' के और भी व्यापक अर्थ समझ में आते हैं। अर्थात् यह स्पष्ट है कि 'स्व' में सारे सुख व 'अ-स्व' या 'पराए' में सभी दु:ख है।

तब हम विचार करें हमारी जीवन शैली में कितने 'स्व' हैं या वह कितनी 'स्वस्थ' है। हमारे आहार-विहार, बोलचाल, रीति-रिवाज, उत्सव-पर्व, उनको मनाने के ढंग सब स्वस्थ यानि अपने होना चाहिए। क्या हम अपनी भाषा 'स्वभाषा' बोलते हैं? क्या हमारी वेशभूषा 'स्वदेशी' है या हमारे विचार और आचरण में अपनी संस्कृति की छबि है?

एक सरल उदाहरण से बात स्पष्ट करता हूँ हम दूसरों की कोई भी वस्तु कब लेते हैं? जब वह हमारे पास न हो अथवा जो है वह बहुत अच्छी न हो। एक और परिस्थिति में ऐसा करना पड़ता है जब हम हमारे पास वह वस्तु हो पर हमें याद ही न हो कि वह हमारे पास है। तीसरी दशा जब कोई हमें अपनी वस्तु उपयोग न करने दे, जबरदस्ती अपनी वस्तु हम पर लाद दे, हमें विवश कर दें।

अब सोचिए, क्या हम भारतीयों की अपनी भाषा अपनी परम्परा, अपनी संस्कृति और इन सबको अपनाने की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है? अवश्य है, लेकिन अधिकांशत: हम अपनी ही श्रेष्ठताओं को भूल रहे हैं। संकल्प लीजिए 'स्व का गौरव' अपना कर सब प्रकार से अपने देश, समाज, पर्यावरण व जीवन को स्वस्थ्य बनाएँगें और निस्संकोच सारे स्वजनों को भी ऐसा करने का आग्रह करते रहेंगें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- चंदा उतरा झील में -शशिपुरवार ०६
- मिल गई खुशियाँ -विमला रस्तोगी १४
- सबसे बड़ा धन -अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' ३६
- सच्चाई की जीत -टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला ४२

जानकारी

- शब्दों का रोचक संसार -ललितनारायण उपाध्याय ४७

आलेख

- हिंदी का स्थान -पिंकी सिंघल २४

कविता

- हिंदी -प्रभुदयाल श्रीवास्तव ०५
- नदियाँ -अंकुश्री ४१

स्तंभ

- लोकमाता अहिल्याबाई होलकर -अरविन्द जवळेकर १६
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी २३
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' २८
- आपकी पाती - ३१
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल ४५
- पुस्तक परिचय - ५०

नाटक

- गणनायक से सीख -डॉ. सेवाराम नंदवाल ०८
- बाल विनोबा -पूर्णिमा मित्रा २०

चित्रकथा

- राम के साथ कौन -देवांशु वत्स १७
- जादू -संकेत गोस्वामी ४०
- खतरे का काम -देवांशु वत्स ४९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** **चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कविता–हिंदी दिवस १४ सितम्बर

हिंदी

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव
छिंदवाड़ा (म. प्र.)

लेख लिखा मैंने हिंदी में,
लिखी कहानी हिंदी में।
लंदन से वापस आकर फिर,
बोली नानी हिंदी में।

गरमी में कश्मीर गये तो,
घूमें कठुआ श्रीनगर।
मजे–मजे से बोल रहे थे,
सब सैलानी हिंदी में।

पापा के सँग गए घूमने,
हम कोच्ची में केरल के।
छबि गृहों में लगा सिनेमा,
'शिवाजी बाल' हिंदी में।

बेंगलूरू में एक बड़े से,
होटल में खाना खाया।
सब लोगों ने ही माँगा था,
खाना, पानी हिंदी में।

उत्तर–दक्षिण, पूरब–पश्चिम,
में हिंदी सबको आती।
जगह–जगह पर हमने जाकर,
बातें जानी हिंदी में।

रोज विदेशी धरती से भी,
लोग यहाँ पर आते हैं।
उन्हें नमस्ते कहकर करते,
हम अगवानी हिंदी में।

अमरनाथ पहुँचा करते हैं,
तीर्थ यात्री दुनिया के।
बोला करते जय बाबा, जय,
जय बर्फानी हिंदी में।

उड़िया कन्नड़ असमियाँ सी,
कई भाषाएँ भारत में।
लेकिन सबको बहुत लुभाती,
बोली वाणी हिंदी में।

भारत के नेता जाते हैं,
कहीं विदेशी धरती पर।
देते रहते अक्सर भाषण,
अब तूफानी, हिंदी में।

मान यहाँ सब भाषाओं को,
पूरा–पूरा मिलता है।
लेकिन पढ़ने लिखने में,
होती आसानी हिंदी में।

कहानी

चंदा उतरा झील में

– शशि पुरवार

सूरज और चंदा दो भाई हैं। दोनों में बहुत प्रेम है और स्वभाव से दोनों घुमन्तू। आते–जाते समय दोनों रोज मिलते हैं। सूरज दिन का राजा है तो चंदा खूबसूरत रात का राजा है।

एक दिन चंदा बहुत उदास था। वह आज घर से जल्दी निकला। चंदा को रास्ते में सूरज मिला। दोनों भाई एक–दूसरे को देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

सूरज ने पूछा– क्या हुआ मेरे भाई! उदास क्यों हो?

चंदा ने कहा– भाई! बहुत दिनों से बच्चों से नहीं मिला हूँ। बच्चों के साथ खेलने का बहुत मन है। छुट्टियाँ हैं, चलो... हम बच्चों के साथ खूब मस्ती करेंगे।

सूरज भी बहुत प्रसन्न हुआ– हाँ, मुझे भी बच्चों से मिलना है। चलो बहुत आनंद आएगा।

दोनों उछलते–कूदते, घूमते हुए पहाड़ों पर गए। इतनी हरियाली के बाद भी पहाड़ बहुत गर्म थे। पेड़ों की छाँव ही थोड़ी शीतलता प्रदान कर रही थी।

पहाड़ों पर टहलते हुए उन्हें हवा मिली; वह पेड़ों के साथ खेल रही थी।

चंदा– हवा कैसी हो? आज पेड़ों के साथ खूब मस्ती कर रही हो?

हवा– मैं तो प्रतिदिन इनसे मिलने आती हूँ। तुम दोनों साथ में कहाँ जा रहे हो?

चंदा– हम बच्चों से मिलने जा रहे हैं। हमें भी तुम्हारे साथ खेलना है।

थोड़ी देर तीनों साथ में खेलते रहे। उन्हें देखकर बादल भी आ गए। हवा बादलों को उड़ाती, चंदा खूब ताली बजाकर खिलखिलाता। तीनों मिलकर बहुत खुश हुए।

चंदा ने हवा से कहा– तुम भी हमारे साथ घूमने चलो।

तीनों घूमते हुए नगर गए। नगर में बड़े–बड़े भवन और दौड़ती हुई गाड़ियों का धुआँ देखकर दोनों व्याकुल हो गए। इमारतों के बीच थोड़ी–सी हरियाली छुप–सी गयी थी।

चंदा ने सूरज से कहा– इतना सूनापन क्यों है? चलो बच्चों को बाहर बुलाएँ।

सूरज बोला– ठीक है अभी मैं जा रहा हूँ। हम अलग–अलग ही बच्चों से मिलेंगे।

नगर किनारे सागर उदास बैठा मिला। सागर, चंदा और सूरज को देखकर थोड़ा प्रसन्न हुआ।

सागर बोला– लोगों ने इतना कचरा डाल दिया है कि मेरे साथ बच्चे खेलना ही नहीं चाहते।

चंदा ने देखा सागर के मुँह में कचरा फँसा हुआ है। हवा ने दौड़कर सागर के मुँह से कचरा निकाला, यह करते हुए हवा खारी हो गयी और व्याकुल होकर चली गयी। चंदा से सागर का दुःख नहीं देखा गया।

चंदा ने कहा– चिंता मत करो, हम प्रतिदिन तुमने मिलेंगे। जब सूरज अस्त होगा तब तक मैं भी आ जाऊँगा।

लेकिन सागर के खारेपन व गन्दगी के कारण वे कभी उसके पास नहीं जा सके। दोनों दूर से ही बातें करते व उनकी किरणें सागर को सहला देतीं।

दूसरे दिन सुबह सूरज दादा समय से ही निकले। लेकिन यह क्या घरों में झाँका तो बच्चे काँच की खिड़कियों पर पर्दे लगाकर सो रहे थे। सूरज निराश हो गया। दिन चढ़ता रहा लेकिन बच्चे बाहर खेलने नहीं आये। बच्चे शाला आते-जाते ही दिखाई देते थे। यहाँ तक कि छुट्टियों में भी बच्चे बाहर नहीं निकले।

रात में चंदा भी आया। लेकिन बड़ी-बड़ी इमारतों में चंदा को भी बच्चे नहीं दिखे। चंदा ने इमारत के बीच जाकर खिड़की से झाँकने का प्रयत्न किया तो बच्चे बंद कमरे में मोबाइल फोन के साथ खेल रहे थे।

कहीं-कहीं इमारतों में तरणताल यानि स्विमिंग पूल बने थे जहाँ इक्का-दुक्का बच्चे तैराकी कर रहे थे। कुछ भीड़-भरे नगरों में सड़क किनारे बैठे मिले। देर रात में फिर चंदा ने खिड़की से झाँका, माँ बच्चों को सुला रही थी। चंदा निराश हो गया। कोई भी बच्चों को कहानी नहीं सुना रहा था।

दूसरे दिन सूरज ने चंदा से कहा- हम फिर आयेंगे। दूसरे दिन दोनों को रास्ते में आते-जाते गाँव मिला। दोनों गाँव में घूमने लगे और बहुत प्रसन्न हुए। सुबह उगते हुए सूरज ने देखा- बच्चे पेड़ों से अमिया तोड़ रहे थे।

सड़क पर छुपन-छुपाई खेल रहे थे। गाँव में एक सुंदर-सी झील थी, बच्चे झील में नहाते हुए खेल रहे थे। सूरज ने जैसे ही बच्चों को देखा, उनके पास गया। बच्चे सूरज को देखकर बहुत खुश हुए।

जैसे-जैसे सूरज पास जाने लगा, पानी पर गिरती तेज किरणों की चकाचौंध से बच्चों की आँखें बंद होने लगी। बच्चे परेशान ना हो इसीलिए वह जाते-जाते दूर से बच्चों को देखता रहा।

शाम को चंदा भी गाँव में गया। चंदा बच्चों से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ। चुभती गर्मी के कारण रात तक बच्चे पानी में मस्ती कर रहे थे। चंदा भी उनके साथ खेलने के लिए धीरे से झील में उतर गया। बच्चे चंदा को अपने बीच पाकर खुश हुए। बच्चों के चेहरे पर चमक आ गई। बच्चे चंदा को पकड़ने के लिए पानी पर हाथ मारने लगे। चंदा उनके साथ लुका-छुपी का खेल खेलता रहा। खिलखिलाते हुए बच्चे खेलते-खेलते तैरना भी सीख रहे थे। झील भी बहुत प्रसन्न थी। चंदा रात भर उनके साथ खेलता रहा। चंदा की शीतल किरणें तपते मौसम में शीतलता प्रदान कर रही थीं। जाते-जाते चंदा ने वचन दिया वह नित्य उनके पास आएगा और नगर के बच्चों को भी यह जीवन जीना सिखाएगा।

बच्चों का मित्र चंदा अपने मोहक रूप से सबका मन मोहकर चला गया। कल मैं फिर आऊँगा मित्रो! हम प्रतिदिन मिलेंगे। झील और बच्चे चंदा के आँखों से ओझल होने तक हाथ हिलाते रहे। राम-राम, चंदा! फिर जल्दी आना।

- मुंबई (महाराष्ट्र)

गणनायक से सीखें

– डॉ. सेवाराम नन्दवाल

पात्र परिचय

समवयस्क बच्चे–

१) कुश २) भव्या ३) मानस ४) दक्ष ५) हनी ६) तनुजा ७) गणपति जी

(कुश–भव्या का घर। उनके सहपाठी–मित्र उनके घर आए हुए हैं।)

कुश– दक्ष तूने गणपति जी के ऊपर निबंध लिख लिया? नहीं लिखा तो दीदी की डाँट खाना पड़ेगी।

भव्या– या फिर कान पकड़कर खड़े रहो या मुर्गा बनकर कुकड़–कूं करना पड़ेगा।

दक्ष– मैंने तो नहीं लिखा और तुम लोगों ने?

भव्या– न मैंने लिखा न कुश भैया ने।

मानस– लिखा तो मैंने भी नहीं। मैंने सोचा हम लोग आपस में चर्चा करके फिर लिख लेंगे।

दक्ष (मुस्कराते हुए)– मुझे इतना पता है कि भगवान गणेश जिनकी प्रथम वंदना होती है। वे गणों के पति अर्थात् गणपति हैं। उनके पूजन के बिना कोई भी पूजन सफल नहीं होता।

हनी– क्या वे सचमुच इतने शक्तिशाली हैं?

तनुजा– तुमने देखा नहीं हर काम का शुभारंभ उनसे ही होता है। वास्तव में कार्यारंभ किया जाना एवं श्री गणेश पूजन एक दूसरे के पर्याय हैं।

मानस– हाँ, जैसे तुम लोग जब अपनी परीक्षा की तैयारी की शुरुआत करते हो तो उसे 'श्री गणेश' नाम से कहा जाना प्रचलित है।

दक्ष– उसी तरह विवाह समारोह का जिस दिन शुभारंभ होता है उसमें भी सबसे पहले गणेश पूजन कर विवाह समारोह का श्रीगणेश करना संबोधित किया जाता है।

कुश (मुस्कराते हुए)– चलो पूछ लेते हैं न?

दक्ष– किससे, तुम्हारे दादाजी से?

कुश (मुस्कुराते हुए)– मेरे दादाजी से नहीं उनके भी दादाजी याने सारे जगत के दादा याने महादादा से। नहीं समझे... अरे उसी से पूछते हैं जिस पर हमें निबंध लिखना है।

भव्या– वैसे हमारे दादाजी ने बता दिया है कि समस्त मांगलिक कार्यों के आरंभ में श्रीगणेश के पूजन, स्तवन, स्मरण, नमन आदि का विधान है। विद्यारंभ या व्यावसायिक बहीखातों, मांगलिक वाक्यांश 'श्री गणेशाय नमः' अवश्य लिखा जाना चाहिए।

कुश– चलो बाकी गणेशजी से ही पूछते हैं।

हनी (आश्चर्य से)– क्या वे बताएँगे?

भव्या– हाँ हमार व्यवहार मित्रतापूर्ण है। वास्तव में वे हैं ही इतने सौम्य–शांत कि उन्हें देखते ही एक अद्भुत शांति का अनुभव होता है, कोई झिझक नहीं होती पूछने में।

कुश– और सबसे बड़ी बात यह है कि वे स्वयं भक्तों के घर पहुँचते हैं उनके कष्ट निवारण करने, अच्छाई का संदेश देने।

दक्ष– चलो फिर चलते हैं, कहाँ चलना पड़ेगा?

भव्या– यहीं हमारे घर में। हमने गणपति जी का एक बहुत बड़ा चित्र दीवार पर स्थापित है।

(सारे बच्चे पूजा घर में गणपति जी के चित्र के सामने पहुँचते हैं और हाथ जोड़कर नमन करने लगते हैं– 'जय गणपति बप्पा की'।)

कुश (प्रतिमा को थपथपाते)– गणपति बप्पा हमें आपके ऊपर निबंध लिखना है थोड़ी सहायता कर दो न?

भव्या– हाँ, गजानन जी! हमारे मित्रों के

सामने हमारे सम्मान का प्रश्न है।''

गणपति (आँखें खोलते हुए)– ''पूछो बच्चो! क्या पूछना चाहते हो ?

कुश– आपको यह बताना है कि आपने स्वरूप में छुपे प्रतीकात्मक संदेशों से हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं ?

भव्या– सीधे शब्दों में यह कि आपसे हम क्या शिक्षा या संदेश ग्रहण कर सकते हैं ?''

गणपति (हँसते हुए)– मेरी ओर ध्यान से देखते हुए तुम स्वयं ही ढूँढ़ निकालो तो अच्छा होगा। मैंने सुना है कम्प्यूटर युग के तुम बच्चे बड़ों–बड़ों के कान कतरने में बड़े कुशल हो। मैं भी देखूँ तुम्हारी बुद्धि कितनी पैनी या पानी में है? वैसे निष्कर्ष रूप में मैं सबकी व्याख्या करते चलूँगा।

कुश (मुस्कराते हुए)– ठीक है। आपके सूप जैसे बड़े–बड़े कान क्या यह नहीं सिखाते कि सबकी बातें बड़े ध्यान से सुनो और उसमें से अच्छाई ग्रहण करो और शेष को छिलके की तरह हवा में बिखेर दो।

दक्ष– बड़े कान इस बात के प्रतीक हो सकते हैं कि अधिक से अधिक सुनो और बोलो कम से कम।

मानस– मेरे दादाजी कहते हैं कि कम बोलना बुद्धिमानी की निशानी और स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद भी है। कान से सबकी सुनो और जो उपयुक्त लगे वह कार्य करो।

गणपति– मगर आजकल तो लोग सुनने के बजाय बोलने में अधिक रुचि लेते हैं। जब कि मेरे कान स्पष्ट रूप से यह संदेश देते हैं कि अधिक से अधिक सुनो।

भव्या– आपका तात्पर्य यही न कि हम सब कुछ सुनें तथा सूप की भाँति श्रेष्ठ बातों को स्वीकारते हुए शेष को छिलके की भाँति हवा में उड़ा दें।

हनी– बड़े कान इस बात के भी द्योतक हैं कि सबकी सुनने के बाद धीरता, गंभीरतापूर्वक मनन करने वाला व्यक्ति ही अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

गणपति– सबकी बात सुनो और जो काम की न हो उन्हें विस्मृत कर दो याने किसी के कहे को हृदय से न लगाओ अन्यथा हृदय रोग हो सकता है।

तनुजा– आपका उदर विशाल है इसलिए आपको लंबोदर कहा जाता है। उसी के अनुपात में मुँह

भी तो है फिर भी आप कम बोलने वाले कहे जाते हैं।

कुश– एक आदर्श जीवन के लिए बड़ा सिर और बड़े कान मनुष्य के अंदर स्थित असीमित बुद्धि का प्रतीक है।

गणपति– हाँ बच्चो! यह उचित है कि हर व्यक्ति को बड़े सिर का होना चाहिए यानी उसकी सोच का दायरा विस्तृत हो, संकुचित या छोटा नहीं हो तभी बिना भेदभाव के सबका हित सोचा और क्रियान्वित किया जा सकता है।

भव्या– अच्छा साथियो! अब यह सोचो, गजानन जी की छोटी–छोटी प्यारी आँखें क्या संदेश देती हैं।

मानस– इनकी सीधी दृष्टि वाली, विश्वास से परिपूर्ण आँखें हमें अपने ध्यान को जीवन लक्ष्य पर गड़ाए रखने की प्रेरणा देती हैं।

हनी– ''इनके छोटे नेत्र हमें एकाग्रचित्त होने का पाठ सिखाते हैं। ये हमें अपने लक्ष्य पर केंद्रित होते हुए मन को भटकने से रोकने का पाठ सिखाती हैं।

गणपति– हाँ बच्चो! मेरी नन्हीं आँखें प्रतीक हैं सूक्ष्म दृष्टि की। यदि दृष्टि सूक्ष्म या केन्द्रित होगी तो कोई भी वस्तु तुम्हारी दृष्टि से बच नहीं पाएगी।

तनुजा– और गणपति जी की लंबी, विशाल सूंड के क्या अर्थ हैं?

भव्या (तत्परता से)– यह मैं बता सकती हूँ। इनकी लंबी चौड़ी सूंड यह बताती है कि अपनी योग्यता और अनुकूलता को सदैव बड़ा रखो।

मानस– हम अच्छे–बुरे में भेद अवश्य पहचानें और दूसरे लोगों को भी बताएँ। इससे हम भी मुसीबत से बचे रहेंगे और समाज भी सुरक्षित रहेगा।

गणपति– हाँ बच्चो! बड़ी सूंड का यह लाभ है कि ये दूर तक सूँघ सकती है। दूर तक सूँघना यानी दूरदर्शी होना। प्रत्येक व्यक्ति को यह चाहिए कि वह भविष्य को पहले ही सूंघ ले, पढ़ ले और सटीक अनुमान भाँपते हुए तदनुसार अपनी कार्यशैली बनाए।

भव्या– आओ अब जानते हैं कि गणपति जी के विशाल पेट के अंदर क्या विशाल संदेश निहित है? ये लंबोदर हैं क्योंकि समस्त चराचर सृष्टि इनके उदर में विचरती है।

कुश– बड़ा पेट याने बड़ी से बड़ी बातों को पचाने और सहनशीलता की पराकाष्ठा की प्रेरणा इससे प्राप्त होती है।''

दक्ष– तात्पर्य यह कि कई बातों को हमें अपने अंदर ही समाहित कर पचा लेना चाहिए तथा इधर की बात उधर नहीं करना चाहिए।

हनी– अच्छी–बुरी दोनों प्रकार की बातों की समान रूप से स्वीकारना चाहिए।

मानस– इनका मोटा उदर इस बात का परिचायक है कि व्यक्ति को सबका भला–बुरा सुनकर, मंथन कर, अनावश्यक को प्रचारित नहीं करना चाहिए।

तनुजा– इनका विशाल पेट क्या यह नहीं दर्शाता कि हमें उदार प्रवृत्ति का होना चाहिए।

गणपति– सांसारिकता में सुनी हुई अनेक बातें हमें अपने पेट में समाहित कर पचा लेना चाहिए। व्यर्थ के तर्क–कुतर्क में नहीं उलझते हुए गंभीर वृत्ति अपनाना चाहिए। तात्पर्य यह कि जीवन में जो भी अच्छा–बुरा घटे उसे शांति से स्वीकारें, अपनाएँ। विषम परिस्थिति में ऊँच–नीच में, धैर्य न खोते हुए उसे सहन करने का प्रयास करें।

हनी– अब गणपति जी के आशीर्वादी मुद्रा वाले हाथ पर चर्चा करें।

मानस– इनके आशीर्वादी हाथ से हमें उच्च कार्यक्षमता और अनुकूल क्षमता की सीख मिलती है।

कुश– इनके वरदहस्त से हमें यह संदेश मिलता है कि परिस्थिति के अनुकूल हमें स्वयं को ढालने की क्षमता होनी चाहिए। ऐसे लोग प्राय: सफल होते हैं।

तनुजा– इनका आशीर्वाद देते हुए हाथ हमें

आध्यात्मिक, सात्विक पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। हमें दूसरों की सुरक्षा व सहायता के लिए तत्पर रहना चाहिए। आशीर्वादी हाथ हमें सुरक्षा का आश्वासन देता प्रतीत होता है।

गणपति– इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति अच्छे काम और विचार को बढ़ावा देने के लिए हमेशा अपने हाथों को बढ़ाया करें।

मानस– गणपति जी के हाथ में रखे फरसे से हम क्या सीख प्राप्त कर सकते हैं?

भव्या– मेरे विचार से वह यह संदेश देता है कि अनुचित काम करने वाले को कठोर दण्ड मिलना चाहिए क्योंकि ऐसे लोग समाज–देश के लिए हानिकारक होते हैं।

हनी– कुछ कमियों के कारण हमारे देश में कतिपय बुराइयाँ बिना डरे विकसित होती जा रही हैं।

गणपति– देखो बच्चो! बुराई और भ्रष्टाचार के प्रत्येक प्रारूप को नष्ट करने के लिए तेज धार अति आवश्यक है। हम प्रत्येक बुराई के विरुद्ध आक्रामक रूप अपना लें तो शोषण और प्रताड़ना जैसी कोई वस्तु शेष नहीं रहेगी।

कुश (मुस्कराते हुए)– गणपति जी! आपके चरणों में रखे मोदक प्रसाद से हम क्या शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं?

मानस– यही कि जो अपना जीवन सत्यनिष्ठा के लिए समर्पित करते हैं उन्हें संसार पुरस्कार अवश्य प्रदान करता है।

भव्या– प्रसाद यह दर्शाता है कि सब कुछ आपके चरणों में अर्पित है इसलिए अपने लिए उसमें से सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य चुनो और उसे पाने का प्रत्येक संभव प्रयास करो।

गणपति– हाँ हमें जो कुछ भी अच्छा मिला है उसे समाज में वितरित करें इससे समाज में सब समरसता की भावना विकसित होगी और समृद्धि बरसेगी।

कुश– गणपति जी! आपके कितने विविध रूप हैं। आप प्रथम पूज्य, मंगलकर्ता और देवताओं के प्रमुख तो हैं साथ ही बुद्धि के देवता भी हैं।

भव्या– नि:संदेह आपके अनोखे स्वरूप से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

मानस– मित्रो! पता है गणपति बप्पा को व्यावहारिक देवता भी कहा जाता है।

तनुजा– व्यावहारिक मतलब?

मानस– व्यावहारिक इन अर्थों में कि वे अपने भक्तगणों के प्रत्येक दिन और हर मांगलिक कार्य में सम्मिलित होते हैं। दुकान का उद्घाटन हो, नए वाहन की खरीदी हो, विवाह या संतान–जन्म हो हर अवसर पर सबसे पहले गणपति जी ही पूजते हैं याने प्रत्येक भक्त के जीवन के हर आनंद में वे सहभागी होते हैं।

हनी (श्रद्धापूर्वक)– ऐसे भव्य गणनायक को हमारा शत शत प्रणाम, नमन!

कुश (हाथ जोड़ते)– धन्यवाद गणपति जी! हमें अच्छी तरह समझाने के लिए।

भव्या (हाथ जोड़ते हुए)– धन्यवाद गणपति जी!

(सारे बच्चे झुककर प्रणाम करते हैं, मंच पर नाटक समाप्ति का सूचक धीरे–धीरे प्रकाश कम हो जाता है।)

– इन्दौर (म. प्र.)

प्रणाम है—

एकदंत, गजमुख, लम्बोदर,
शूर्पकर्ण शुभ नाम हैं।
मंगलमूर्ति, गजानन, गणपति,
वक्रतुण्ड गुणधाम हैं।
ऐसे शुभकारी, सुखकारी,
दुखहारी अभिराम हैं।
विघ्न–विनाशक गौरीनंदन,
शंकर सुवन प्रणाम हैं।

आलेख (विज्ञापन)

रानी दुर्गावती – जनकल्याण और शौर्य का शिखर

– डॉ. मोहन यादव

वह दुर्गाष्टमी का दिन था जब भारत भूमि पर एक ऐसी बेटी ने जन्म लिया, जिसके संस्कारों में एक तरफ तो करुणा और संवेदना समाहित थी, वहीं दूसरी ओर शौर्य, पराक्रम और सतीत्व रगों में दौड़ता था। आज पाँच सौ वर्षों के बाद भी हम यदि इतनी श्रद्धा और गौरव के साथ वीरांगना रानी दुर्गावती का स्मरण कर रहे हैं तो वह किसी राज परिवार की प्रमुख होने के नाते नहीं, बल्कि उनके दूरगामी जनकल्याणकारी कार्यों और शौर्य की उस गाथा के कारण कर रहे हैं, जिसने भारत की नारी की वीरता को शिखरतम बिन्दु तक रेखांकित किया है।

५ अक्टूबर १५२४ को कालिंजर में पैदा हुई दुर्गावती का बलिदान २४ जून १५६४ में हुआ। अर्थात् ४० वर्ष की आयु में उन्होंने एक ऐसी प्रेरक परिपाटी खड़ी कर दी, जो आज भी मानवता के लिए मिसाल बनी हुई है। महारानी की वीरता की बात करें तो उन्होंने अपने छोटे से जीवन काल में लगभग ५२ युद्ध लड़े और उनमें से ५१ युद्धों में विजय प्राप्त हुई।

मालवा के सुल्तान बाज बहादुर से लेकर अकबर तक मुगलों के अनेक भारी आक्रमणों का मुँह तोड़ जवाब देने वाली दुर्गावती ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए आत्म बलिदान दिया।

कोई दुश्मन उनकी देह को हाथ नहीं लगा सका। क्या अद्भुत अवतारी थीं रानी दुर्गावती। रानी के विवाह के मात्र चार वर्ष बाद ही पति दलपत शाह की मृत्यु के कारण पूरे राजकाज का बोझ सिर पर आने के बाद भी न केवल एक वर्ष के अपने बेटे की परवरिश की बल्कि निरंतर युद्ध के मैदान में भी वीरता दिखाई।

सोलह वर्ष के शासन काल में एक ओर जहाँ दुर्गावती लगभग ५२ बड़े युद्धों में रणचण्डी की तरह टूटती रहीं, वहीं दूसरी ओर राज्य की जनता की खुशहाली के लिए पूरी संवेदनाओं के साथ सक्रिय रहीं। जल संरक्षण के क्षेत्र में रानी दुर्गावती के योगदान को वैश्विक मानकों में सबसे ऊपर रखा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। अपने सहयोगियों के प्रति ऐसा असीम स्नेह करती थीं कि उनके नाम पर कई बाँध, तालाब और बावड़ियाँ बनाई।

अपने सहयोगी के नाम पर निर्मित आधारताल आज भी जबलपुर में रानी के जल संरक्षण के उच्च मानकों की गाथा गौरव के साथ कह रहा है।

शौर्य या वीरता रानी दुर्गावती के व्यक्तित्व का एक पहलू था। वो एक कुशल योद्धा होने के साथ–साथ एक कुशल प्रशासक थीं और उनकी छवि एक ऐसी रानी के रूप में भी थी, जो प्रजा के कष्टों को पूरी गहराई से अनुभव करती थीं। इसीलिए गोंडवाना क्षेत्र में उन्हें उनकी वीरता और अदम्य साहस के अलावा उनके जनकल्याणकारी शासन के लिए भी याद किया जाता है।

रानी दुर्गावती के शासन में नारी की सुरक्षा और सम्मान उत्कर्ष पर था। न्याय और समाज व्यवस्था के लिए हजारों गाँवों में रानी के प्रतिनिधि रहते थे। प्रजा की बात रानी स्वयं सुनती थीं। पूरा कोइतूर गोंड समाज उनके निष्पक्ष न्याय के लिए उन्हें 'न्याय की देवी' के नाम से पुकारता और जानता था।

रानी दुर्गावती अपने पराजित दुश्मन के साथ भी उदारता का व्यवहार करती थीं और उन्हें सम्मानपूर्वक कीमती उपहार और पुरस्कार के साथ शुभकामनाएँ देकर अपने नियंत्रण में रखती थीं। उनकी यह रणनीति हमेशा काम करती थी इसीलिए कभी भी गोंडवाना में विद्रोह के स्वर नहीं उठे।

वे जन कल्याण की जीवंत प्रतिमूर्ति थीं। गोंड साम्राज्य में बने तमाम मठ मंदिर, कुएँ, तालाब, नहरें, धर्मशालाएँ इसकी गवाह हैं। उनके साम्राज्य में समृद्धि ऐसी थी कि जनता स्वर्ण मुद्राओं से व्यापार करती थी। इसी समृद्धि को लूटने के लिए अकबर जैसे आक्रांताओं

R. O. No. D16017/24

ने दुर्गावती के राज्य पर बार-बार आक्रमण किए। रानी ने बार-बार अकबर को शिकस्त दी, लेकिन अकबर की सेना के साथ चौथे युद्ध में वे बुरी तरह घिर गईं।

उनकी आँख और गर्दन में तीर घुस गए तब उन्होंने अपने संकल्प 'विजय नहीं तो क्या हुआ, बलिदान तो संभव है' का स्मरण करते हुए स्वयं के वक्ष में कटार घोंपकर रणभूमि में आत्म बलिदान कर दिया। रानी की चिता को रणभूमि में ही अग्नि दी गई। उसी स्थान को बरेला नाम से जानते हैं।

सच तो यह है कि आत्म अस्मिता और स्वतंत्रता के लिए दिए जाने वाले ऐसे बलिदान ही प्रतिमान गढ़ते हैं। लेकिन यह प्रतिमान प्रतिपल ध्यान में रहें तो पीढ़ियों तक राष्ट्र स्वाभिमान जाग्रत रह सकता है। दुर्भाग्य से १९४७ की स्वतंत्रता के बाद भी लंबे समय तक रानी दुर्गावती जैसी वीरांगनाओं और शूरवीरों की स्मृतियों को संजोए रखने के ठीक प्रयास नहीं हुए।

मुगलों, शकों, हूणों और अँग्रेजों के विरुद्ध किए गए युद्धों की शृंखला में हमारे वनवासी, जनजाति समाज के नायकों का अतुलनीय और अविस्मरणीय योगदान है। परन्तु सच तो यही है कि रानी दुर्गावती से लेकर महानायक बिरसा मुण्डा, शंकर शाह, रघुनाथ शाह, टंट्या मामा जैसे महानायकों के शौर्य की प्राण प्रतिष्ठा का काम हमारे विचार की सरकारों ने ही किया है।

भारत में जहाँ 'जनजातीय गौरव दिवस' जैसा आत्म-सम्मान प्रदान करने वाले प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी जी का संकल्प हो अथवा जनजाति मंत्रालय के पृथक गठन का पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी का ऐतिहासिक निर्णय हो, राष्ट्रीय विचार ने ही अपने उन भाई-बहनों के सम्मान और संसाधन पर ध्यान केन्द्रित किया है, जो कभी राजा थे लेकिन समय के थपेड़े में बिछड़ते और पिछड़ते चले गए।

जनजाति समाज की समृद्ध परंपराओं पर केन्द्रित करते हुए हमारी सरकारों ने अपने बंधुओं को सम्मान और संसाधन से परिपूर्ण बनाने के लिए 'पेसा'

एक्ट लागू किया। महानायकों की स्मृतियों को चिरस्थायी रखने के लिए जहाँ संग्रहालय बनाए जा रहे हैं, वहीं माननीय प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी जी की पहल पर भोपाल में रेलवे स्टेशन को रानी कमलापति को समर्पित कर दिया गया है।

मुझे लगता है कि जनजाति महानायकों के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए हमें अभी बहुत काम करने की आवश्यकता है। मेरी सरकार की पहली कैबिनेट बैठक रानी दुर्गावती की सुशासन नगरी जबलपुर में किए जाने का हमारा भावनात्मक आधार ही था। यह रानी दुर्गावती का ५००वाँ जन्म शताब्दी वर्ष चल रहा है। हम इसे दूरगामी प्रेरणा पर्व के रूप में मनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा संचालित अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं का भरपूर लाभ जनजाति समाज को मिले, ऐसा भरसक प्रयास हम कर रहे हैं। जनजाति अस्मिता, संरक्षण और सांस्कृतिक संवर्द्धन हमारी सरकार का संकल्प है। जैसा कि मैंने पूर्व में कहा कि जनजाति समाज को सम्मान और संसाधन प्रदान करना हमारा नैतिक दायित्व है। यही रानी दुर्गावती जैसी शौर्य, पराक्रम और संवेदनशीलता की प्रतिमूर्ति के श्रीचरणों में सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– (लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।)

R. O. No. D16017/24

मिल गई खुशियाँ

– विमला रस्तोगी

उसका नाम तरुणिमा है, प्यार से सब उसे तरु कहते हैं। वह सात वर्ष की है। उसका कोई छोटा भाई बहन नहीं है। वह शाला से आकर मोबाइल और टी. वी. से ही चिपकी रहती है। किसी मेहमान का बच्चा आ जाय तो अपने खिलौने भी नहीं देती।

तरुणिमा एक दिन अपने पिताजी के साथ उद्यान में बैठी थी, जाड़ों के दिन थे। उद्यान से अधिकतर लोग जा चुके थे। ''चलो पिताजी रात हो रही है'' तरु के पिता से कहा तभी उसकी दृष्टि उद्यान के एक कोने में पेड़ के पीछे दुबके हुए सफेद–से बच्चे पर पड़ी। तरु पिताजी के साथ उस कोने में गई, ''यह तो बिल्ली का बच्चा है।'' पिताजी ने उसे उठा लिया। ''यह कितना कमजोर है। हम इसे घर ले चलते हैं।'' तरु बोली। बिल्ली के बच्चे को घर ले आई तरु। गर्म कपड़े में उसे रखा, दूध पिलाया। उसे प्यार से सहलाया बिल्ली का बच्चा बहुत सुंदर था। सफेद रंग बीच में कहीं कहीं काले चकत्ते।

तरु की खुशी देखकर माँ–पिताजी भी खुश थे। एक छोटी मुढ़िया पर बिल्ली के बच्चे को बिठा दिया।

तरु ने बच्चे का नाम स्वीटी रख दिया। तरु स्वीटी के साथ खूब खेलती। उसे गोद में बिठाती, प्यार करती। शाला से आकर पहले स्वीटी को दूध चावल पनीर खिलाती फिर स्वयं खाती। तरु को जैसे जीता जागता खिलौना मिल गया।

माँ–पिताजी इस बात से प्रसन्न थे कि वह अब मोबाइल और टी. वी. से चिपकी नहीं रहती। स्वीटी के साथ खेलती है। तरु अलग कमरे में सोने लगी। साथ में स्वीटी का बिस्तर लगवा लिया। स्वीटी कभी–कभी उसके पलंग पर आकर सो जाती। वह स्वीटी के साथ गेंद खेलती। स्वीटी उसे प्यार करती वह स्वीटी को करती।

दिन बीतते गए स्वीटी पूरी बिल्ली बन गई। चमकीली आँखों वाली खूबसूरत बिल्ली। एक दिन तरु अपने मकान के आगे खड़ी थी स्वीटी भी थी। गली में सन्नाटा था। एक लड़का तेजी से भागकर आया तरु के गले का सोने का लॉकेट पर हाथ मारा स्वीटी उस पर झपटी। उसका मुँह नोंच लिया। लड़का लॉकेट छोड़कर भागा। तरु को कुछ नहीं हुआ। लॉकेट भी बच गया।

इस घटना के बाद घर में स्वीटी की इज्जत और भी बढ़ गई। स्वीटी को सब खूब प्यार करते। तरु उसे गोद में लेकर झूला झूलती। स्वीटी बहुत प्यारी जो थी।

एक दिन तरु के पिताजी ने बताया उनका स्थानांतरण का आदेश आया है। दिल्ली से लखनऊ जाना है। तय तारीख पर सामान ट्रक में लग गया।

स्वीटी को क्लीनर को सौंप दिया। तरु और उसके माँ–पिताजी हवाई जहाज से लखनऊ पहुँच गए।

सामान का ट्रक भी आ गया, पर उसमें स्वीटी नहीं आई। तरु के पिताजी से पूछा। पिताजी ने कहा– ''एक दिन को उनके मित्र के पास है।''

''यह क्या बात हुई पिताजी! मैं स्वीटी के बिना कैसे रहूँगी? लेकर आइए।''

अब पिताजी को सच बताना पड़ा कि– ''क्लीनर की गलती से स्वीटी बीच रास्ते में कहीं उतर गई फिर मिली नहीं। तरु का रो–रोकर बुरा हाल

हो गया। खाना भी नहीं खाया– 'न जाने स्वीटी कहाँ होगी? कैसी होगी?' यही चिंता थी उसे।

पिताजी ने दिल्ली में मकान मालकिन को फोन किया तो उन्होंने बताया कि स्वीटी एक दिन आई थी पर दरवाजे से ही वापिस चली गई।

तरु ने कहा– ''पिताजी मुझे दिल्ली ले चलो।'' तरु स्वीटी के बिना बहुत उदास थी। वह गुमसुम रहने लगी। तबियत खराब हो गई। डॉक्टर ने राय दी तरु को दिल्ली ले जाओ।

पिताजी तरु को लेकर उसी घर में आए। शाम को उद्यान में गए। पिताजी ने उद्यान के आस–पास भी देखा पर स्वीटी नहीं मिली। सारा दिन उसे ढूँढ़ा उसकी प्रतीक्षा की।

''कहाँ हो स्वीटी, आ जाओ।'' मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती, तुम्हें लेने आई हूँ।'' तरु ने धीमी आवाज में कहा। स्वीटी वहाँ नहीं थी। अगले दिन तरु को वापिस जाना था, तरु दुखी थी। स्वीटी नहीं मिली।

''पिताजी जाने से पहले एक बार उद्यान में चलते हैं।'' तरु ने कहा।

पिताजी उद्यान ले गए। दोनों उद्यान में चक्कर लगाकर स्वीटी को ढूँढ़ने लगे। स्वीटी नहीं दिखी। तभी उद्यान में बनी हेज में कुछ हलचल हुई तरु उधर भागी। देखा वहाँ स्वीटी थी।

कितनी कमजोर हो गई थी। ''पिताजी! स्वीटी।'' तरु मारे खुशी के चिल्लाई। तरु ने स्वीटी को गोद में उठा लिया प्यार किया। स्वीटी की आँखों में आँसू आ गए।

तरु ने स्वीटी की सफाई की मकान मालकिन के घर आकर दूध पिलाया। कुछ ही देर में स्वीटी को अपनी गोद में लेकर तरु गाड़ी में बैठी।

तरु को सब खुशियाँ मिल गईं। इस बार वे कार से दिल्ली आ रहे थे।

– दिल्ली

अहिल्या का विवाह

– अरविन्द जवळेकर

(गत अंक से आगे)

ऐसे ही दिन बीतते जा रहे थे। एक दिन बड़े सवेरे अहिल्या नित्य की भाँति हाथ में पूजा का थाल लेकर शिव मंदिर में पूजा के लिए गई थी।

जब वह पूजा करने के उपरांत मंदिर के सभा मंडप में आकर स्तोत्र का पाठ करते हुए बैठी ही थी कि उसे दो मराठा सेनानी दर्शन के लिए मंदिर में प्रवेश करते दिखाई दिए।

वे सेनानी कोई ऐसे वैसे नहीं थे, उनमें से एक थे मराठा साम्राज्य के पेशवा बाजीराव प्रथम, और दूसरे थे उनके मित्र, सहयोगी और मालवा के सूबेदार मल्हारराव होळकर।

दोनों उस नन्हीं तेजस्वी बालिका को स्तोत्र पाठ करते देखकर बहुत प्रभावित थे। उन्होंने कौतूहल से उसका परिचय प्राप्त किया और उसे शाबासी भी दी। दोनों को अहिल्या बहुत पसंद आई थी।

वापस अपने डेरे पर जाकर उन्होंने विचार–विमर्श कर यह तय किया कि गाँव के पाटिल माणकोजी शिंदे से बात कर उनसे उनकी बेटी अहिल्या का विवाह मल्हारराव के पुत्र खंडेराव के साथ करने का प्रस्ताव दिया जाए।

उन्होंने माणकोजी से बात की और अहिल्या का विवाह खंडेराव के साथ तय हो गया। कुछ ही दिनों के बाद ईसवी सन् १७३३ में अहिल्याबाई का विवाह बड़े धूमधाम के साथ मल्हारराव होळकर के पुत्र खंडेराव के साथ संपन्न हो गया। इस विवाह में उन्हें आशीर्वाद देने के लिए मराठा साम्राज्य के पेशवा बाजीराव प्रथम स्वयं उपस्थित थे।

इस प्रकार महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव चौंडी के पाटिल माणकोजी शिंदे की यह कन्या अहिल्या, मालवा के सूबेदार मल्हारराव होळकर की बहु और उनके बेटे खंडेराव की पत्नी अहिल्याबाई बनकर मालवा में आ गयी।

(आगे की कथा अवश्य पढ़िए अगले अंक में।)

– इन्दौर (म. प्र.)

शब्द चित्र – गणेश

– राजेश गुजर

राम के साथ कौन

चित्रकथा : देवांशु वत्स

आलेख (विज्ञापन)

आइये हम सब मिलकर सफल बनाए 'एक पेड़ माँ के नाम अभियान'

– डॉ. मोहन यादव

प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी ने विश्व पर्यावरण दिवस पे पुनीत अवसर पर ५ जून को बुद्ध जयंती पार्क में एक पौधा लगाकर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान की शुरुआत की थी। उन्होंने अपने लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' के १११ वें एपिसोड में इस अभियान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रत्येक देशवासी से अपनी माँ के प्रति सम्मान स्वरूप कम से कम एक पौधा अवश्य लगाने की मार्मिक अपील की थी।

प्रधानमंत्री की उस मार्मिक अपील ने देशवासियों के दिलों को छू लिया और देश के विभिन्न भागों में लोगों के बीच अपनी माँ के प्रति अपने सम्मान की अभिव्यक्ति के रूप में पौधे रोपित करने की होड़ लग गई।

एक माह के अंदर ही देशभर में करोड़ों पौधे लगाए जा चुके हैं और यह अभियान १४० करोड़ पेड़ लगाने के लक्ष्य की ओर द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है। हर भारतवासी अपूर्व उत्साह के साथ इस अभियान में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए आतुर है।

पर्यावरण की सुरक्षा और समृद्धि के लिए समर्पित इस अभियान को मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल की अनूठी उपलब्धि मानते हुए उन्हें मध्य प्रदेश की जनता की ओर से साधुवाद देता हूँ। इसमें कोई संदेह नहीं कि 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने, धरती का तापमान कम करने, भूजल स्तर को ऊपर लाने और प्रदूषण नियंत्रण में महत्वपूर्ण योगदान करने में समर्थ होगा।

मुझे प्रसन्नता है कि भारतीय जनसंघ (वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी) के संस्थापक और महान देशभक्त स्वर्गीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जन्म दिवस की शुभ तिथि ६ जुलाई से एक पखवाड़े के अंदर भोपाल जिले में २० लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। अकेले ६ जुलाई को भोपाल जिले में विभिन्न स्थानों पर १२ लाख पौधे लगाने का लक्ष्य है। ६ जुलाई को नगर निगम भोपाल द्वारा ३०० स्थानों पर पौधे लगाने के लिए सांसद, विधायक और जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया है।

भोपाल में ४८० हेक्टेयर क्षेत्र में २० लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। इसी तरह प्रदेश की औद्योगिक राजधानी इंदौर में ५१ लाख पौधे लगाने के कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया जा चुका है। एक जुलाई से १५ जुलाई तक 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान को युद्ध स्तर पर संचालित किया जा रहा है। एक पखवाड़े तक चलने वाले इस अभियान को सफल बनाने के लिए सभी आवश्यक तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा चुका है।

मुझे पूरा विश्वास है कि मध्यप्रदेश 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत जन–जन की भागीदारी से एक पखवाड़े के अंदर अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होगा। हम निश्चित रूप से सारे देश में एक अनूठा कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

प्रदेश के हर शहर, गाँव और कस्बे के लोगों में इस अभियान से जुड़ने की जो उत्कंठा जाग उठी है वह उनके मन में माँ के प्रति अगाध श्रद्धा और आदर की परिचायक तो है ही, साथ ही यह प्रधानमंत्री मोदी

R. O. No. D16017/24

के प्रति उनके विश्वास और प्रेम की अभिव्यक्ति भी है। मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री के इस भरोसे की कसौटी पर खरा उतरने के लिए कटिबद्ध है कि केंद्र सरकार की अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं और अभियानों की भाँति 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान की सफलता में भी मध्यप्रदेश का योगदान अहम साबित होगा।

यहाँ यह विशेष उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश ने २०१७ में भाजपा सरकार के कार्यकाल में ही देश में एक दिन में सबसे अधिक पौधे लगाने का कीर्तिमान स्थापित किया था। तब १५ लाख वालंटियर ने प्रदेशभर में १२ घंटे में ६.६ करोड़ से अधिक पौधे लगाए थे।

तत्कालीन भाजपा सरकार के उस अविस्मरणीय अभियान में प्रदेश की जीवन रेखा पुण्य सलिला नर्मदा के किनारे २० अलग-अलग प्रजातियों के पौधे लगाए गए थे।

मुझे विश्वास है कि जन-जन की भागीदारी से 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान में भी मध्यप्रदेश का योगदान भी पर्यावरण की सुरक्षा के क्षेत्र में एक नया इतिहास रचने में सफल होगा।

मैं मानता हूँ कि माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने पर्यावरण रक्षा के इस पुनीत अभियान को 'एक पेड़ माँ के नाम' का रूप देकर इसे मातृवंदना से जोड़ने की जो स्तुत्य पहल की है उसके लिए वे भूरि-भूरि प्रशंसा के हकदार हैं। प्रधानमंत्री मोदी का अपनी माँ के प्रति जो समर्पण और श्रद्धाभाव रहा है वह हम सबके लिए प्रेरणा का विषय है।

इस अभियान का एक निहितार्थ यह भी है कि हम सब प्रकृति की गोद में ही पलकर बड़े होते हैं। अत: इस अभियान से जुड़कर हमें प्रकृति के प्रति अपने कर्त्तव्य को भी पूरा करने की संतुष्टि मिल सकती है। मैं प्रदेशवासियों से हार्दिक अपील करता हूँ कि वे इस पुनीत अभियान को सफल बनाने के लिए तत्परता से आगे आकर इसमें प्राणपण से सहयोग प्रदान करें।

यशस्वी प्रधानमंत्री की पहल पर शुरू किया गया यह पुनीत अभियान पर्यावरण के संरक्षण की दिशा में किए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान करने में समर्थ होगा।

– (लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।)

R. O. No. D16017/24

बाल विनोबा

– पूर्णिमा मित्रा

पात्र परिचय

विनायक– ८–१० वर्ष का बालक।
महादेव मोघे– ८–१० वर्ष का बालक।
शंभूराव– ६०–६२ वर्ष के पुरुष।
बालकृष्ण वैद्य– ६०–६२ वर्ष के पुरुष।
रुक्मिणी– ३०–३२ वर्ष की युवती।
(सभी पात्र मराठी वेशभूषा में)

(प्रथम दृश्य)

(पर्दा खुलता है।)

एक वृद्ध मुढ्ढे पर बैठे, एक समाचार–पत्र पढ़ रहे हैं। अचानक उनको खाँसी आ जाती है।)

शंभूराव– विन्या! ओ विन्या! एक लोटा पानी तो ला।

विनायक (लोटा लेकर मंच पर आकर)– यह लीजिए, दादाजी! पानी।

शंभूराव– बीनू तेरी आई (माँ) क्या कर रही है?

विनायक– पड़ौस में वो बूढ़ी दादी जी हैं। वह बीमार है। उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। माँ उनके लिए पथ्य बना रही है।

शंभूराव– इसका अर्थ है तेरी आई बाहर जाने वाली है। (मराठी पद्धति की साड़ी पहने एक महिला मंच पर आती है।)

रुक्मिणी बाई– पिताजी! मैं बाहर जा रही हूँ। मुझे आज्ञा दें। (झुककर प्रणाम करती है।)

शंभूराव– दोपहर का भोजन लौटकर बनाओगी बहू?

रुक्मिणी बाई– पिताजी! भोजन तो बन चुका है। रसोई में ढककर रखा है। बच्चों को पढ़ने के लिये बैठा दिया है।

शंभूराव– वाह! बहू! तीन–तीन बेटों के लालन–पालन करने के बाद भी दीन–दुखियों की सेवा करती हो। मुझे तुम पर गर्व है। घर पर स्वाध्याय में लगी रहती हो।

रुक्मिणी बाई– पिताजी! आप स्वयं अच्छे हैं। इसीलिए आप मेरी छोटी–छोटी अच्छाई की भी बढ़ा–चढ़ाकर प्रशंसा करते हैं। यदि आप मुझे बाहर जाने नहीं देते तो मैं भला कैसे सेवा कार्य करती?

शंभूराव– विन्या के पिताजी तो काम के संबंध में बाहर ही रहते हैं। लेकिन तुमने इस संबंध में कभी खेद प्रकट नहीं किया। कुछ स्त्रियाँ परनिंदा में ही लगी रहती हैं। तुम सदैव परमात्मा का स्मरण करती हो। तुम तीनों बच्चों को भी अच्छे संस्कार देती रहती हो।

रुक्मिणी बाई– विन्या! अंदर से पथ्य की कटोरी लेकर आ। दादीजी को देनी है।

विन्या– अभी लाता हूँ आई! (अंदर चला जाता है।)

शंभूराव– बेटी! एक बात कहूँ? तुम बाहर जा

रही हो कुछ गहने पहन लो।

रुक्मिणी बाई– पिताजी! मेरे विचार से सेवा–सुश्रुषा करने के लिये जब हम जा रहे हो तो हमें सादगी से जाना चाहिए। जिससे उस व्यक्ति को लगे कि विपदा की घड़ी में हम तन–मन से उसके साथ हैं।

विनायक (हाथ में ढक्कन लगा कटोरा लिये मंच पर आकर)– चलो माँ! दादीजी आपकी प्रतीक्षा कर रही होगीं।

शंभूराव– हाँ बेटा! संभलकर जाना। (रुक्मिणी बाई और विनायक मंच से बाहर चले जाते हैं। पर्दा गिर जाता है।)

(द्वितीय दृश्य)

(मंच के मध्य दो मुड्डे रखे हुए हैं। शंभूराव के हाथ में कुछ कलम है।)

शंभूराव– विन्या! एक बार अपनी आई को मेरे पास भेज।

रुक्मिणी बाई (मंच पर आकर)– पिताजी! आपने मुझे बुलाया।

शंभूराव– यह कलम मैं बच्चों के लिये लाया हूँ। आवश्यकता के अनुसार उनको दे देना। (कलम रुक्मिणी बाई को पकड़ाते हैं।)

रुक्मिणी बाई– ये कलम पाकर बच्चे बड़े प्रसन्न हो जायेंगे।

शंभूराव– एक बात कहूँ। तुम्हारा लाड़ला विन्या तो, अपने समवयस्क बच्चों से एकदम निराला है। बिल्कुल तुम पर गया है।

रुक्मिणी बाई– जी! बच्चे तो अपने माता के व्यवहार का ही अनुकरण करते हैं। माँ कथनों पर विश्वास करते हैं। इसीलिये तो उसे पहली गुरु कहा जाता है।

शंभूराव– बहू! मुझे आश्चर्य होता है। तुम शाला और कॉलेज में पढ़ी नहीं हो फिर तुम इतनी बुद्धिमान और सुगढ़ हो। अपने तीनों बेटों को अच्छे संस्कार देती रहती हो। केवल लाड़–प्यार देकर उनको बिगाड़ती नहीं हो।

रुक्मिणी बाई– अपने बच्चों से पशु–पक्षी भी प्यार करते हैं। अबोध अवस्था तक पालन करते हैं। लेकिन मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जो अपने संतानों को सुयोग्य नागरिक बना सकता है।

शंभूराव– हाँ! यह बात तो सही है। अब विन्या को ही देख लो। कितना शांत और समझदार है। अभी से तुम्हारी तरह सादगी और करुणा के गुण इसमें झलकते हैं।

रुक्मिणी बाई– हाँ, पिताजी! उसमें अभी से सत्यवादिता, परोपकार आज्ञाकारिता, तेजस्विता, जैसे गुण है। मुझे लगता है, यह आगे चलकर भावे कुछ का नाम उज्ज्वल करेगा।

शंभूराव– हाँ, बहू! मुझे भी ऐसा ही लगता है।

(तृतीय दृश्य)

(मंच में पास–पास दो मुड्ढों में गद्दी बिछी है। एक में शंभूराव बैठे हैं। शंभूराव के हाथ में एक मराठी में लिखी गीता है।)

शंभूराव– विन्या ओ विन्या! एक लोटा पानी तो पिला।

रुक्मिणी बाई (अंदर से आकर, उन्हें पानी का लोटा पकड़ाती है)– पिताजी! विन्या तो घर पर नहीं है।

रुक्मिणी बाई– गली के बच्चों के साथ खेल रहा है। बच्चों के शारीरिक विकास के लिये उनका खेलना आवश्यक है। अपनी आयु के बच्चों के साथ खेलने से बच्चों में मिलनसारिता के भाव पैदा होते हैं। (इतने में विनायक और एक वृद्ध मराठी सज्जन मंच पर उपस्थित होते हैं।)

विनायक–आई! देखो मेरे साथ कौन आया है?

रुक्मिणी बाई (पिता के पैर छूकर)– पिताजी आप! पिताजी, बिना कोई पूर्व सूचना। घर में सब कुशल मंगल तो हैं?

शंभूराव (संबंधी से गले मिलकर)– आइए आइए बालकृष्ण जी! बहुत दिन हुए आपसे मिले। अब आये हो तो जाने की जल्दी मत करना। चलिये, इस कुर्सी में विराजिये।

बालकृष्ण वैद्य (कुर्सी पर बैठकर)– भाई! शंभूराव जी आप बैठिये। मैं इधर से गुजर रहा था तो सोचा आप सब से मिलता चलूँ।

शंभूराव– आपकी बेटी, हमारे घर की लक्ष्मी है। लक्ष्मी घर छोड़कर मायके कैसे जाये? अच्छा हुआ आप यहाँ पधारे।

बालकृष्ण वैद्य– दूसरी लड़कियाँ मायके आती है तो इसकी याद आती है।

शंभूराव– बेटी! तुम्हारे पिताजी क्या कह रहे हैं? बेटी! तुम भी बैठो।

रुक्मिणी बाई (नीचे बैठकर)– पिताजी! मेरा मन भी आप सभी से मिलने को तड़पता है।

शंभूराव– आपसे एक बात कहूँ, समधी जी! आपकी कन्या, हमारे भावे कुल में ईश्वर के वरदान के रूप में बहू बनकर आयी है।

(चतुर्थ दृश्य)

(दो बच्चे फर्श पर बैठे हैं।)

विनायक– आज तो खेलते हुए बड़ा आनंद आया। लेकिन महादेव! तुम्हारा मुँह उतरा क्यों है?

महादेव मोघे– वीनू! तुम्हें याद है, उस दिन अपने मित्रों के साथ खेल रहे थे तो उन सबने क्या कहा था?

विनायक– उन सभी ने अपने परिवार में हुए संतों की बात कही थी।

महादेव मोघे– यह कितने दुःख की बात है, अपने कोकणस्थ सारस्वत ब्राह्मणों में कोई संत हुआ नहीं।

विनायक– ऐसा कैसे हो सकता है? अवश्य कोई न कोई हुए ही होंगे। अपने समाज में बहुत से लोग ऊँचे पद पर हैं, कुछ समाज सेवी हैं, कुछ क्रांतिकारी हैं।

महादेव मोघे– पर संत नहीं हैं। तुम चाहो तो अपने दादाजी से पूछ लो।

विनायक (दृढ़ स्वर में)– कोई बात नहीं महादेव! मैं बनूँगा संत। तब कोई नहीं कह सकेगा कि हमारे कोंकणी सारस्वत ब्राह्मणों में कोई संत नहीं है।

महादेव मोघे (चौंककर)– यह क्या कह रहे हो? संत बनना आसान नहीं है। इसके लिये घर–बार छोड़ना पड़ता है। गुरु से दीक्षा लेनी पड़ती है। स्थान–स्थान भटकना पड़ता है।

विनायक– मैं भी बड़ा होकर ऐसा ही करूँगा। देखना मैं ऐसा काम करूँगा कि मेरी आई की सभी लोग प्रशंसा करेंगे।

महादेव मोघे– देख विन्या! संत बनकर मुझे भूल मत जाना। मैं तो तेरा बाल मित्र हूँ।

विनायक (हँसते हुए)– तुम भी मत भूल जाना।

महादेव मोघे– चलो, घर जाओ। तुम्हारी आई तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी।

विनायक– हाँ भाई! चलता हूँ।

(दोनों मित्र खड़े होकर मंच के एक तरफ बढ़ने लगते हैं। पर्दा गिर जाता है।)

– बीकानेर
(राजस्थान)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

हिंदी का स्थान

– पिंकी सिंघल

जिस देश की माटी में हम पल बढ़कर बड़े हुए हैं, उस माटी के प्रति हमारा लगाव और प्रेम होना स्वाभाविक है। देश की वन संपदा, जीव, जंतु, नदी, नाले, झरने, पहाड़, पशु, पक्षी आदि इन सबसे हमारा आत्मीय संबंध अपने आप ही स्थापित हो जाता है। सोचिए यदि देश की इन चीजों से हमारा इतना लगाव है तो देश की भाषा जिस के बिना हम मूक ही कहलाएँगे, से हमारा क्या संबंध होगा। किसी भी देश की भाषा उस देश के निवासियों के अंतर्मन और मस्तिष्क के भावों को आधार प्रदान करती है। भाषा का प्रयोग कर कर कि हम अपने भावों की दूसरों तक प्रेषित कर सकते हैं और उन्हें समझा सकते हैं कि हमारे मन मस्तिष्क में इस समय क्या चल रहा है। बिना भाषा का प्रयोग किए हमारे व्यवहार के आधार पर ही कोई इस बात का अंदाजा नहीं लगा सकता कि आखिर हम कहना क्या चाहते हैं। संकेतों और हाव–भाव को समझना इतना आसान नहीं होता जितना बोलकर अपने आपको व्यक्त करना। हर चीज हाव भाव और अपने संकेतों के माध्यम से नहीं समझाई जा सकती। उन बातों को दूसरों को समझाने के लिए हमें शब्दों का प्रयोग करना ही पड़ता है, भाषा का सहारा लेना ही पड़ता है।

हम सभी भारत देश के निवासी हैं और इस बात पर हमें गर्व भी है। भारत देश में अनेक प्रकार की बोलियों और भाषाओं को बोला जाता है। विविधता में एकता का प्रतीक है हमारा भारत राष्ट्र, चूँकि भारत में अनेक राज्य हैं और प्रत्येक राज्य की अपनी एक विशिष्ट अलग पहचान है, अलग बोली है, अलग भाषा है किन्तु इतना सब होते हुए भी हम सभी भारतवासी एक हैं और एक–दूसरे की भाषा को भली प्रकार सहजता और आसानी से समझ सकते हैं।

भारत में चाहे जितनी भी भाषाएँ और बोलियों को बोला जाता हो, किन्तु यहाँ हिंदी का अपना एक विशिष्ट स्थान है। हिंदी भारत देश के भाल की बिंदी है अर्थात् यह शिरोधार्य है। अपने राष्ट्र की भाषा का सम्मान करना अपने माता के सम्मान करने के बराबर ही है। जिस प्रकार हम अपने माता–पिता और पूर्वजों का आदर सत्कार करते हैं उसी प्रकार हमारे हृदयों में अपनी भाषा के प्रति भी सम्मान होना चाहिए और यह सम्मान किसी को दिखाने के लिए नहीं, अपितु अनुभव करने के लिए होना चाहिए, सच्चे हृदय से होना चाहिए।

नि:संदेह, हिंदी बोलते समय प्रत्येक भारतवासी को गर्व एवं अतुलनीय हर्ष का अनुभव होता है। जब विदेशों में भी लोग हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं और हिंदी बोलते समय स्वयं को सम्मानित अनुभव करते हैं, तो यह देख खुशी के मारे हमारा सीना चौड़ा हो जाता है। जरा विचार कीजिए, हिंदी–भाषी ना होने के बाद भी विदेशों में हिंदी के प्रति आकर्षण किस प्रकार बढ़ता जा रहा है, विदेश में रहने वाले लोग हिंदी बोलकर स्वयं को सम्मानित अनुभव करते हैं और एक नई भाषा सीखकर गौरवान्वित भी।

जब हिंदी भाषी ना होने के बाद भी दुनिया के अनेक देश हिंदी के प्रति अपने हृदय में यह आदर और सम्मान रख सकते हैं तो हम तो हैं ही हिंदीभाषी, हमारे लिए तो हिंदी हमारी माता के समान है और अपनी माता के सम्मान को बनाए रखना हम सबका परम दायित्व बनता है। अपने इस दायित्व को निभाने में हमें किसी प्रकार की कोताही नहीं बरतनी चाहिए और पूरी ईमानदारी और गर्व के भाव के साथ इस जिम्मेदारी को दिल से निभाना चाहिए।

नि:संदेह हमारे राष्ट्र में हिंदी का अत्यधिक सम्मान किया जाता है और हिंदी के प्रति सम्मान को प्रकट करने के लिए हम हिंदी का जमकर प्रयोग करते हैं और हिंदी प्रयोग करने में स्वयं को गौरवान्वित भी अनुभव करते हैं, किन्तु कहा जाता है कि अपवाद तो हर

जगह पाए जाते हैं। हमारी हिंदी भाषा भी इन अपवादों से स्वयं को बचा नहीं पाई है। कहने का तात्पर्य है कि आज हमारे देश के लाखों लोग हिंदी भाषा बोलने में लज्जा का अनुभव करते हैं। व्यक्तिगत अपवादों को छोड़ भी दें तो भी अनेक प्रकार के सरकारी और गैर सरकारी दोनों ही प्रकार के शिक्षण संस्थाओं और कार्यालयों में हिंदी प्रयोग को क्लिष्ट समझा जाता है और इसके स्थान पर विदेशी भाषाओं के प्रयोग को सहज समझकर प्रयोग किया जाता है। यह अदि दुखद है।

विदेशी भाषाओं को बोलना, सीखना और लिखना कदापि गलत नहीं, अपितु यह तो बहुत ही अच्छी बात है कि हम दूसरे देश की भाषाओं को सीखने में रुचि दिखा रहे हैं और अपने सामान्य ज्ञान में निरंतर वृद्धि भी कर रहे हैं, जो आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूत बनाने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। किंतु विदेशी भाषाओं को सीखकर अपने ही देश में उनका वर्चस्व स्थापित करने की अनुमति देना यह सरासर गलत है। अपनी भाषाओं के स्थान पर विदेशी भाषाओं को प्रयोग करना भी गलत है। अपनी भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं का प्रयोग स्वीकार्य हो सकता है। किन्तु, विदेशी भाषाओं का स्थान अपनी भाषा को उपेक्षित कर बनाना किसी भी दशा में स्वीकार्य नहीं है।

वर्तमान में अनेक कार्यालयों, संस्थानों और कंपनियों में हिंदी का न के बराबर प्रयोग किया जाता है। हिंदी के स्थान पर विदेशी भाषा का प्रयोग करने में ही वहाँ गर्व का अनुभव किया जाता है। वहाँ हिंदी बोलने वाले कर्मचारियों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। ऐसा करना ना केवल अनैतिकता की श्रेणी में आता है अपितु अपने राष्ट्र के सम्मान पर भी यह एक प्रहार ही है। भारत के असंख्य लोग हिंदी बोलने में लज्जा का अनुभव करते हैं क्योंकि उनके अनुसार विदेशी भाषाओं के सामने हिंदी फीकी लगती है और हिंदी बोलने पर उनका अपमान होता है। इस प्रकार की सोच नितांत निंदनीय है, लज्जास्पद है।

निज भाषा के प्रति इस प्रकार की घटिया सोच या निम्न स्तर की मानसिकता ही हिंदी के पतन का मुख्य कारण बनती जा रही है। हिंदी के उत्थान का उत्तरदायित्व हम सभी पर है। विदेशों तक में जिस भाषा को इतना स्नेह और सम्मान दिया जा रहा है उस भाषा की अपने ही घर में, अपने ही देश में इस प्रकार की दुखद स्थिति को देखकर मन आहत होता है। क्यों लोग यह भूल जाते हैं कि हमारी अपनी भाषा ही हमारी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। विदेशी भाषाओं को सीखना-सिखाना उस स्थिति में स्वीकार किया जा सकता है जब हम अपनी भाषाओं को प्रमुखता देकर अपनाएँ और जिस प्रकार विदेशी लोग अपनी भाषा के प्रति गौरव अनुभव करते हैं, उसी प्रकार हम भी अपनी भाषा के गौरव को बनाए रखने की दिशा में हर संभव प्रयास करें। देश के बाहर इसके सम्मान को और भी ऊँचा उठाने के हमें अपने सार्थक प्रयत्न करने चाहिए। हिंदी हमारा गौरव है, हमारा सम्मान है, हमारा अभिमान है, यह बात हमें कदापि नहीं भूलनी चाहिए।

अपने राष्ट्र के अस्तित्व को संरक्षित करने अपनी संस्कृति को अगली पीढ़ियों तक हस्तांतरित करने हेतु हमें अपनी भाषा को स्नेह पूर्वक सिंचित करना होगा और इसके प्रयोग में गर्व अनुभव करना होगा। यदि हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति को बनाए रखना है तो हमें हिंदी को हर हाल में उसका स्थान दिलाना होगा।

– दिल्ली

R. O. No. D16017/24

अन्नदाता के जीवन में आयी खुशहाली

गरीब वर्ग को मिला सम्मानजनक जीवन

कमजोर वर्ग के साथ प्रदेश सरकार

आर्थिक समृद्धि की ओर बढ़ता मध्यप्रदेश

औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन

तेज गति से अधोसंरचना विकास

सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अभ्युदय

गौ-संरक्षण एवं संवर्धन

स्वच्छ भारत अभियान में मध्यप्रदेश बना सिरमौर

अन्य उपलब्धियां

भारत सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में लगातार अग्रणी मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश शासन

R. O. No. D16017/24

कामताप्रसाद गुरु : हिंदी के पाणिनी जिन्होंने बाल साहित्य भी लिखा

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

हिंदी व्याकरण के मर्मज्ञ–सर्वज्ञ कामताप्रसाद गुरु की ख्याति हिंदी के पाणिनी के रूप में है किन्तु साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा काव्य, नाटक, निबंध, आलोचना, व्यंग्य, अनुवाद और बाल–किशोर साहित्य में भी उनका अनूठा योगदान था।

२५ दिसम्बर १८७५ को सागर (म. प्र.) के चतुर्भुज घाट, परकोटा में श्री. गंगाप्रसाद गुरु के पुत्र के रूप में जन्में कामता प्रसाद गुरु जी के पूर्वज मूल रूप से उत्तर प्रदेश के थे। उनके वृद्ध पितामह देवताराम पांडेय सागर के राजघराने के गुरु क्या बने कि बाद की सारी पीढ़ियों के नाम के साथ उनकी जाति पांडेय के स्थान पर गुरु उपनाम का ही प्रयोग होने लगा। १८९३ में सागर से मैट्रिक उत्तीर्ण कर वे वहीं शिक्षक बन गए। अपने परिवार और क्षेत्र के प्रति उनके मन में असीम प्रेम था। अनेक उच्च पदों पर अवसर मिलने के बाद भी वे बाहर नहीं गए और गए भी तो अल्प समय के पश्चात पुन: अपने क्षेत्र में लौट आए। भाषा और साहित्य के निमित्त वे कुछ समय नागपुर, उड़ीसा और प्रयाग रहे। महावीर प्रसाद द्विवेदी के आमंत्रण पर उन्होंने 'सरस्वती' और 'बाल सखा' पत्रिकाओं का संपादन कर हिंदी पत्रकारिता को भी समृद्ध किया।

उनकी प्रारम्भिक रचानाएँ उर्दू में १८९३ में कन्नौज के 'पयामे आशिक' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुईं। वे अपने सर्वप्रिय शिक्षक विनायक राव की पुस्तक 'व्याख्या विधि' पढ़कर लेखन क्षेत्र में प्रवृत्त हुए। भीमासुर वध (१८९६) उनकी पहली पुस्तक थी। **हिंदी भाषा और व्याकरण के क्षेत्र में उनका अद्वितीय कार्य है। भाषा वाक्य प्रथक्करण (१९००), बाल बोध व्याकरण (१९०७) और हिंदी व्याकरण (१९२०) उनके मानक ग्रंथ हैं।**

उनकी बाल कविताएँ 'बाल पद्यावली' पुस्तक में संकलित हैं। उन्हें अनेक भाषाओं का ज्ञान था। छात्रों के लिए हिंदी रीडर तैयार करने के लिए उन्होंने स्वयं शिक्षण बिन्दुओं पर आधारित बाल कविताएँ लिखीं और अनेक प्रख्यात कवियों जैसे मैथिलीशरण गुप्त आदि से भी लिखवाईं।

बाल साहित्य में पहला आलोचनात्मक निबंध 'बाल साहित्य का निर्माण' (सुधा, १९२८) लिखने वाले जहूर बख्श भी उनके ही शिष्य थे।

उनके एक पुत्री और पाँच पुत्र थे जिनमें दो रामेश्वर गुरु (अभिनय गीत) और डॉ. राजेश्वर गुरु (मुस्कान) बाल साहित्य के समर्थ रचनाकार थे।

कामता जी का एक दोहा जो मित्र के बारे में है, साहित्य जगत में बहुत लोकप्रिय हुआ–

उदय अस्त में एक-सा, है जिसका व्यवहार।
वही मित्र सूरजमुखी, कर सकता है प्यार।।

कामता प्रसाद गुरु का निधन १६ नवम्बर १९४७ को जबलपुर में हुआ भारत सरकार ने उनके सम्मान में डाक टिकिट जारी किया था।

अभिनय गीत 'छड़ी' उनकी प्रसिद्ध रचना है। बाल साहित्य के आलोचना ग्रंथों में इसी का उल्लेख मिलता है लेकिन उन्होंने ढेरों रोचक बाल कविताएँ लिखीं हैं, जिनमें से कुछ आप यहाँ पढ़ सकेंगे–

मेरी पुस्तक

यह मेरी पुस्तक प्यारी,
है मुझे बहुत उपकारी।
यह सदा ज्ञान है देती,
जड़ता मति की हर लेती।
जीवन की नौका खेती,
यह करता है हित भारी।
यह भला-बुरा है सहती,
पर अच्छी बातें कहती;
दुख समय साथ है रहती,
यह होती कभी न न्यारी।
धीरज है कभी बँधाती,
साहस है कभी, सिखाती,
यह कभी प्रेम उपजाती,
कर दूर कुटिलता सारी।
पढ़-पढ़ कर कथा पुरानी,
पाते शिक्षा मन-मानी,
सुनकर पुस्तक की वानी,
सब होते हैं व्रतधारी।

श्री कामताप्रसाद गुरु के सम्मान में जारी डाकटिकिट

बगीचा

चलो बालकों आज दिखाएँ, तुम्हें बगीचा बिछा हुआ है। वहाँ हरा रंगीन गलीचा हम सब उस पर बैठ हवा ठंडी पावेंगे, चीजें नई अनेक देख मन बहलावेंगे बीच बाग में बना हुआ है एक फुहारा जिसमें से दिन-रात निकलती है जलधारा उड़ता है सब ओर दूर तक निर्मल पानी, रहती है सब समय वहाँ ठंडक मनमानी। कई रंगों के फूल बगीचे में मिलते हैं। उड़ती है सब ठौर वास जब वे हिलते हैं। रूप सुडौल अनेक क्यारियों में दिखते हैं। हम जैसे आकार पट्टियों पर लिखते हैं भाँति-भाँति के पेड़ वहाँ हैं नये-पुराने रहते हैं जो धूप-मेह में छाता ताने। कच्चे, पक्के, कई स्वाद के, छोटे, भारी फल देते हैं हमें पेड़ यह जग उपकारी। चिड़ियों के प्रिय बोल डालियों से आते हैं मानो बालक कई साथ मिलकर गाते हैं। फिरने को जो लोग बगीचे में जाते हैं आँख, कान, मन, देह, सभी का सुख पाते हैं

छड़ी हमारी

यह सुंदर छड़ी हमारी, है हमें बहुत ही प्यारी।

यह खेल समय हर्षाती,
मन में है साहस लाती,
तन में अति जोर जगाती,
उपयोगी है यह भारी।
हम घोड़ी इसे बनाएँ, कम घेरे में दौड़ाएँ,
कुछ ऐब न इसमें पाएँ, है इसकी तेज सवारी।

यह जीन–लगाम न चाहे,
कुछ काम न दाने का है,
गति में यह तेज हवा है,
यह घोड़ी जग से न्यारी।
यह टेक छलाँग लगाएँ, उँगली पर इसे नचाएँ,
हम इससे चक्कर खाएँ, हम हल्के हैं, यह भारी।

हम केवट हैं बन जाते,
इसकी पतवार बनाते,
नैया को पार लगाते,
लेते हैं कर सरकारी।
इसको बंदूक बनाकर, हम रख लेते कंधे पर,
फिर छोड़ इसे गोली भर, है कितनी भरकम भारी।

अंधे को बाट बताए,
लंगड़े का पैर बढ़ाए,
बूढ़े का भार उठाए,
वह छड़ी परम उपकारी।
लकड़ी यह वन से आई, इसमें है भरी भलाई,
है इसकी सत्य बड़ाई, इससे हमने यह धारी।

जन्मभूमि

जहाँ जन्म देता हमें है विधाता,
उसी ठौर में चित्त है मोद पाता
जहाँ हैं हमारे पिता, बंधु, माता,
उसी भूमि से है हमें सत्य नाता
जहाँ की मिली वायु है जीव-दानी,
जहाँ है लिखा देह में अन्न पानी।
भरी जीभ में है जहाँ की सुबानी,
वही जन्म की भूमि है भूमि-रानी

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

आपकी पाती

अप्रतिम सेनानायक शिवाजी महाराज पर अप्रतिम अंक। यूँ तो देवपुत्र का प्रत्येक अंक अपने आप में विशिष्ट होता है, किन्तु हिंदू साम्राज्य दिनोत्सव के ३५० वर्ष पूर्ण होने पर जून के प्रस्तुत अंक में संपादक महोदय ने डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार-२०२३ के लिए देशभर के रचनाकारों से शिवाजी के जीवन चरित्र संबंधी एकांकियाँ आमंत्रित की थीं।

पुरस्कृत एकांकियों में एक से बढ़कर एक एकांकियाँ हैं, जो शिवाजी महाराज के जीवन के प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालती हैं। हिंदवी स्वराज्य के संस्थापक शिवाजी पर एकांकियाँ लिखकर रचनाकारों ने एक ऐसे ऐतिहासिक चरित्र को जीवंत कर दिया, जिसकी आज के समय में अत्यंत आवश्यकता है।

निश्चित तौर पर ऐसे अंक सभी शालाओं में पहुँचने चाहिए। यह सभी एकांकियाँ मंचन योग्य श्रेष्ठ हैं, जो हमारे युवा छात्र-छात्राओं में बहादुरी और सैन्य कौशल का निर्माण करने में सहायक होगी।

क्योंकि शिवाजी छापामार युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) के कुशलतम संचालकों में से एक हैं। उनका मानना है- 'युद्ध में सफलता की कुंजी है, दुश्मन के दिमाग में घुसना और बुरे इरादों को समझते हुए एक कदम आगे रखना।'

वर्तमान में राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए यह नीति अत्यंत आवश्यक है।

बच्चों में संस्कार रोपने हेतु इस अंक के रचनाकारों को मैं आत्मीय बधाई प्रेषित करने के साथ-साथ संपादक महोदय को भी साधुवाद कहती हूँ कि उन्होंने प्रतियोगिता के लिए नायाब विषय दिया।

– डॉ. शील कौशिक
सिरसा (हिमाचल प्रदेश)

आलेख (विज्ञापन)

जनजातीय गरिमा की पुनर्स्थापना के साथ आर्थिक समृद्धि का महाअभियान

केन्द्र और मध्यप्रदेश सरकार की साझा जनकल्याणकारी नीतियों, योजनाओं और विकास कार्यक्रमों से अब मध्यप्रदेश में जनजातीय गरिमा की पुनर्स्थापना का पुण्य कार्य शुरू हो गया है। साथ आर्थिक समृद्धि के नये पड़ाव हासिल करने का सिलसिला तेजी से चल पड़ा है।

मध्यप्रदेश में तीन विशेष पिछड़ी जनजातियों बैगा, भारिया एवं सहरिया के अलावा कई जनजातियाँ रहती हैं। जनजातीय समुदाय के सामाजिक–शैक्षणिक विकास और संस्कृति संरक्षण और हर क्षेत्र में उन्हें प्रतिनिधित्व देने के नवाचारी प्रयासों को प्रत्येक योजना में शामिल किया गया है।

देश की ७५ विशेष पिछड़ी जनजातियों के समग्र विकास के लिये प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान – पीएम जन मन मिशन की शुरुआत की है। इन जनजातीय समूहों के सामाजिक और आर्थिक कल्याण से जुड़े पीएम जन मन मिशन में बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजातियों के जीवन में पूर्णत: बदलाव के लिये नई सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में नई रणनीतियों के साथ प्रभावी प्रयास किये जायेंगे।

हर जरूरी सुविधा उपलब्ध होगी

पीएम जन मन मिशन में ९ प्रमुख केन्द्रीय मंत्रालयों की ११ महत्वपूर्ण नागरिक सेवाएँ इन विशेष पिछड़ी जनजातियों के घर तक पहुँचाई जायेंगी। पीएम जनमन मिशन में लक्षित वर्ग/जनजाति समूह के सभी लोगों को उनकी पसंदीदा डिजाईन के अनुसार शौचालय सहित पक्का मकान बनाकर दिया जावेगा। हर घर में नल से स्वच्छ जलापूर्ति की जाएगी। इन जनजातियों के गाँवों तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए गाँव–गाँव तक पक्की सड़कें बनाई जायेंगी। इनके घर तक बिजली आपूर्ति की स्थायी व्यवस्था की जाएगी। इन जनजातियों के सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए और अच्छे प्रयास किये जायेंगे तथा आवश्यकतानुसार स्कूल सह छात्रावास भी निर्मित किये जायेंगे।

पीएम जन मन मिशन में इन विशेष पिछड़ी जनजातियों के कौशल विकास के लिये इन्हें व्यावसायिक/कौशल प्रशिक्षण देने के अलावा प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में भी कारगर प्रयास किये जायेंगे। बहुउद्देशीय केन्द्र और मोबाइल मेडिकल वेन में एएनएम के माध्यम से सबको स्वास्थ्य सुविधाओं की बेहतर पहुँच के दायरे में लाया जाएगा। सौ से अधिक आबादी वाले प्रत्येक टोलों–मजरों में आँगनवाड़ी केन्द्र द्वारा अच्छी सुविधाओं की उपलब्धता एवं बहुसेवा केन्द्र में भी आँगनवाड़ी की सुविधा देकर सबको पोषण के लक्ष्य की पूर्ति की जायेगी। वनधन विकास केन्द्रों के माध्यम से इन जनजातियों की आजीविका में सुधार लाने के प्रयास किये जायेंगे। साथ ही इन जनजातियों के गाँव–गाँव तक बेहतर कनेक्टविटी भी सुनिश्चित की जाएगी।

पीएम जनमन मिशन में इन विशेष पिछड़ी जनजातियों को भारत सरकार की पहले से संचालित योजनाओं का शत–प्रतिशत लाभ भी दिलाया जायेगा। इन महाअभियान में लक्षित समुदाय को

R. O. No. D16017/24

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत नि:शुल्क राशन एवं प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के अन्तर्गत नि:शुल्क एलपीजी कनेक्शन दिये जायेगें। प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अन्तर्गत आयुष्मान भारत कार्ड, प्रधानंमत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के अंतर्गत संस्थागत प्रसव, सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन एवं टीबी उन्मूलन के प्रयास तेज किये जायेंगे।

शैक्षणिक अधोसंरचना का विस्तार

इसके अलावा प्रधानमंत्री पोषण (पीएम पोषण) के माध्यम से इन जनजातियों के स्कूली बच्चों को मिड-डे-मील (मध्यान्ह भोजन) उपलब्ध कराया जाएगा। इन जनजातियों को बैंकिंग सुविधाओं का सीधा लाभ देने के लिये प्रधानमंत्री जनधन योजना से जोड़ा जायेगा। साथ ही इस वर्ग की बालिकाओं को सुकन्या समृद्धि योजना का लाभ भी दिलाया जायेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश में पीएम जनमन मिशन में होने वाले विभिन्न विकास कार्यों एवं कल्याण गतिविधियों को मंजूरी दी है। विशेष पिछड़ी जनजातीय क्षेत्रों के २४ जिलों में नए आँगनवाड़ी केन्द्रों, छात्रावासों, बहुउद्देश्यीय केंद्रों, सड़कों और आवासों का निर्माण किया जायेगा। **'सक्षम आँगनवाड़ी एवं पोषण २.०'** योजना के अंतर्गत विशेष जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में १९४ नवीन आँगनवाड़ी केन्द्रों की स्थापना एवं संचालन किया जायेगा।

विशेष पिछड़ी जनजाति क्षेत्रों के ऐसे मजरे टोले, जिनकी जनसंख्या १०० या अधिक हैं और जहाँ आँगनवाड़ी केन्द्र नहीं है, वहाँ नए केन्द्र खोले

R. O. No. D16017/24

जाएँगे। पीएम-जनमन मिशन में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा विशेष पिछड़ी जनजाति बाहुल्य बसाहटों में निवासरत परिवार के बच्चों के लिये गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुविधा के साथ-साथ २० जिलों के ५५ स्थानों पर ११० बसाहटों के निकट बालक और बालिकाओं के लिये पृथक-पृथक छात्रावासों का निर्माण किया जायेगा।

वित्त वर्ष २०२३-२४ से पीएम-जनमन मिशन में विशेष पिछड़ी जनजाति बाहुल्य जिलों में ६० लाख रुपये प्रति केन्द्र की लागत वाले बहुउद्देशीय केन्द्रों का निर्माण किया जायेगा। विशेष पिछड़ी जनजाति क्षेत्रों में अलग-अलग ११ गतिविधियों के लिए मध्यप्रदेश में १२५ बहुउद्देशीय केन्द्रों के निर्माण की स्वीकृति दे दी गई है। इसके लिये शत-प्रतिशत वित्तीय सहायता भारत सरकार उपलब्ध करायेगी।

आवास सुविधाएँ बढ़ेंगी

ग्रामीण विकास विभाग द्वारा क्रियान्वित की जाने वाली योजना में बैंगा, भारिया एवं सहरिया जनजातियों की बसाहट में सड़क सम्पर्क एवं आवास निर्माण की नवीन योजना को भी सैद्धांतिक अनुमोदन दे दिया गया है। विशेष पिछड़ी जनजातियों की मात्र १०० जनसंख्या वाले गाँवों को भी पक्की सड़क से जोड़ा जायेगा। कुल ९८१ सम्पर्क विहीन बसाहटों में २४०३ किलोमीटर लम्बाई के ९७८ मार्ग एवं ५० पुल बनाये जायेंगे। इस कार्य के लिए ३ वर्षों में २३५४ करोड़ रुपये निवेश किये जाएँगे। शासन द्वारा विशेष पिछड़ी जनजातीय बहुल क्षेत्रों में प्रति हितग्राही आवास निर्माण के लिये २ लाख रुपये दिये जायेंगे। मनरेगा से अकुशल श्रमिक की ९०/९५ दिवस की मजदूरी के बराबर २७ हजार रुपये और स्वच्छ भारत मिशन से शौचालय निर्माण के लिये १२ हजार रुपये दिये जायेंगे। इससे प्रदेश में एक लाख से अधिक लक्षित हितग्राही परिवार लाभांवित होंगे।

पढ़ाई की पूरी व्यवस्था

जनजातीय क्षेत्रों में ६३ एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय संचालित हैं। इनमें २५ हजार विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना में कक्षश ११वीं, १२वीं एवं महाविद्यालयीन कक्षाओं में पढ़ रहे दो लाख से अधिक विद्यार्थियों को ३१९ करोड़ रूपये छात्रवृत्ति वितरित की जा चुकी है।

उच्च माध्यमिक शिक्षक, माध्यमिक शिक्षक तथा प्राथमिक शिक्षक संवर्ग में १६ हजार ७७६ पदों पर भर्ती की गई है। विभाग के अधीन १०७८ आश्रम, १९७ जूनियर छात्रावास, १०३२ सीनियर छात्रावास, २१० उत्कृष्ट सीनियर छात्रावास एवं १५४ महाविद्यालयीन छात्रावास संचालित हैं।

इनमें एक लाख ३१ हजार ४७० विद्यार्थी निवासरत हैं। इसके अतिरिक्त विभाग में २२ हजार ९१३ प्राथमिक शालाएँ, ६७८८ माध्यमिक शालाएँ ११०९ हाईस्कूल, ८९८ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं २६ क्रीड़ा परिसर भी स्वीकृत हैं। वर्तमान में ८९ आदिवासी विकासखंडों और ६ विशेष पिछड़ी जनजाति बाहुल्य जिलों में कुल ३८० बारहमासी छात्रावास व आश्रम संचालित हैं। इस वित्त वर्ष में २०८ करोड़ रुपये छात्रावास शिष्यवृत्ति और ११७ करोड़ ३२ लाख रुपये आश्रम शिष्यवृत्ति दी जा चुकी है।

R. O. No. D16017/24

आवास भत्ता योजना में १४० करोड़ १३ लाख रूपये व्यय कर लगभग एक लाख २५ हजार से अधिक विद्यार्थियों को लाभ दिया गया है। विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति योजना में २५१ लाख रुपये व्यय किये जा चुके हैं। जनजातीय वर्ग के विद्यार्थियों के लिये ४७ स्मार्ट क्लासेस का संचालन किया जा रहा है। विभाग के अधीन ९४ सीएम राईज स्कूल संचालित किये जा रहे हैं। सीएम राईज स्कूलों के संचालन व अन्य प्रोत्साहन गतिविधियों के लिये १० करोड़ ३२ लाख रुपये व्यय किये जा चुके हैं। बस्ती विकास योजना में ६२७ कार्यों के लिये ४२ करोड़ ८० लाख रुपये व्यय किये जा चुके हैं।

विभाग के अधीन संचालित एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय, कन्या शिक्षा परिसरों एवं आदर्श आवासीय विद्यालयों में प्रतियोगी परीक्षाओं की शिक्षा के अलावा ९ विद्यालयों में कोपा ट्रेड एवं १६ विद्यालयों में वोकेशनल कोर्सेस का संचालन किया जा रहा है। विभाग द्वारा छिंदवाड़ा, श्योपुर, शहडोल, डिंडौरी एवं मंडला जिले में कम्प्यूटर प्रशिक्षण कौशल विकास केन्द्रों में १०० विद्यार्थियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। राशन आपके द्वार योजना अंतर्गत ४७३ हितग्राहियों को १० करोड़ रुपये से अधिक राशि मार्जिन मनी के रूप में दी जा चुकी है। ४१४ कस्टमाइज्ड वाहन तैयार किये गये हैं तथा ३२१ हितग्राहियों द्वारा आश्रित ग्रामों में राशन बांटा जा रहा है। अनुसूचित जनजाति प्रतिभा योजना में १९ लाख २० हजार रुपये व्यय कर ७६ विद्यार्थियों को लाभांवित किया जा चुका है। विभाग की सभी योजनाओं का लाभ पाने के लिये हितग्राहियों को स्वयं का प्रोफाइल पंजीयन कराने की सुविधा दी गई है। प्रोफाइल पंजीयन के अंतर्गत अब तक २२ लाख से अधिक प्रोफाईल पंजीकृत हो चुके हैं।

वन अधिकार अधिनियम २००६ के अंतर्गत २ लाख ७० हजार दावों को मान्यता दी गई। वन अधिकार पत्रधारकों को कपिल धारा कूप, भूमि सुधार/मेढ़बंधान सिंचाई के लिये सिंचाई पंप और पाईप लाईन, आवास तथा शार्ट टर्म लोन एवं प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ भी दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना में वर्ष २०२१-२२ से ५ वर्षों हेतु २५२३ चयनित ग्रामों के लिये ३९९ करोड़ ६३ लाख रुपये भारत सरकार से मिल चुके हैं। संविधान के अनुच्छेद २७५-एक के अंतर्गत जनजाति क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिये वित्त वर्ष २०२३-२४ में तीन वर्ष की अवधि के लिये ६४१ करोड़ ५१ लाख रुपये की कार्ययोजना प्रस्तावित कर मंजूरी के लिये भारत सरकार को भेजी गई है।

रोजगार के भरपूर अवसर

जनजातीय कार्य विभाग के अधीन मध्यप्रदेश आदिवासी वित्त एवं विकास निगम द्वारा संचालित **'भगवान बिरसा मुण्डा स्वरोजगार योजना'** में अब तक ५६१ पात्र हितग्राहियों को २२ करोड़ १० लाख ६४ हजार ८९५ रुपये वित्तीय सहायता दी जा चुकी है। **'टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना'** में अब तक ४९० पात्र हितग्राहियों को दो करोड़ ६६ लाख ५ हजार १६५ रुपये वितरित किये जा चुके हैं। केवल २०९ प्रकरण अंतिम निराकरण के लिए लंबित हैं।

इस योजना में जनजातीय युवाओं को १० हजार से एक लाख रुपए तक की स्व-रोजगार परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता बैंकों के माध्यम से दी जाती है।

मुख्यमंत्री अनुसूचित जनजाति विशेष परियोजना वित्त पोषण योजना में जनजातीय युवाओं को आजीविका, स्वरोजगार एवं नवाचार से संबंधित सामुदायिक अधोसंरचना निर्माण तथा इससे जुड़ी अन्य गतिविधियों की दो करोड़ रुपये तक की परियोजनाओं का शत-प्रतिशत शासन अनुदान से किया जाता है।

R. O. No. D16017/24

सबसे बड़ा धन

– अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

मानगढ़ का राजा बलवान सिंह बहुत ही लालची, क्रूर तथा अत्याचारी था। यद्यपि उसे अपने पिता से बहुत बड़ा साम्राज्य और अकूत धन-सम्पदा विरासत में प्राप्त हुई थी फिर भी उसके मन में संतोष नहीं था। उसने छल-कपट और बलप्रयोग करके अपने पास-पड़ौस के छोटे, राज्यों की बहुत सारी भूमि तथा अन्य सम्पत्तियाँ हड़प ली थीं। यही नहीं अपने राज्य की जनता पर भी उसने कई प्रकार के उल्टे-सीधे कर लगा रखे थे। जिसके कारण जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। उसके अत्याचारों तथा मनमानी के कारण हर कोई उससे दुखी था लेकिन अपने अहंकार में डूबे राजा को किसी की भी चिंता नहीं थी। वह अपने आप को संसार का सबसे सुखी, धनवान और शक्तिशाली व्यक्ति समझता था।

एक दिन की बात है, राजसभा लगी हुई थी। उसके सारे मंत्री उपस्थित थे कि एकाएक राजा को एक सनक सूझी। वह अपने मंत्रियों से वह पूछ बैठा- ''अच्छा आप सभी हमें बताइए कि इस संसार का सबसे सुखी और धनवान व्यक्ति कौन है?''

सभी को पता था कि राजा अपनी प्रशंसा सुनना चाहता है। अत: सारे दरबारी एक स्वर में बोल पड़े- ''नि:संदेह आप ही हैं महाराज! इस संसार में आप से अधिक सुखी और धनवान व्यक्ति भला दूसरा और कौन हो सकता है?''

अपनी प्रशंसा सुनकर राजा प्रसन्नता में फूल कर कुप्पा हुआ जा रहा था। कि तभी अचानक उसकी दृष्टि अपने वृद्ध मंत्री वेदपाल पर पड़ी। वह अन्य सभासदों की तरह उसकी प्रशंसा नहीं कर रहा था बल्कि चुपचाप शीश झुकाए अपने काम में तल्लीन था। उसे चुप देख राजा को क्रोध आ गया। ''क्यों वेदपाल जी! आप चुप क्यों हो? आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। क्या आप की दृष्टि में मैं संसार का सबसे सुखी और धनवान व्यक्ति नहीं हूँ?'' उसने डपटते हुए पूछा।

''नहीं महाराज! मेरी दृष्टि में तो आप अत्यंत निर्धन और सबसे कम सुखी व्यक्ति हैं।'' वेदपाल ने उत्तर दिया।

''वेदपाल! तुम होश में तो हो.... ? पता है तुम क्या कह रहे हो?'' राजा क्रोध में आग बबूला होकर बोला।

''हाँ महाराज! मैं पूरी तरह से होश में हूँ और पुन: अपनी बात दुहराता हूँ कि आप इस संसार के सबसे कम सुखी और निर्धन व्यक्ति हैं।'' वेदपाल ने पूरी निडरता से कहा। ''ठीक है! अपनी बात को सत्य प्रमाणित करने के लिए तुम्हें मैं दो दिनों का समय देता हूँ। यदि दो दिनों के भीतर तुमने मेरी भेंट उस व्यक्ति से न कराई जो मुझसे भी अधिक सुखी और धनवान हो तो तुम्हें राजधानी के मुख्य चौराहे पर फाँसी पर लटका दिया जाएगा।'' राजा बोला।

''जो आज्ञा महाराज!'' वेदपाल ने कहा और राजसभा से उठकर चला गया।

अचानक घटी इस घटना से सभी सभासद स्तब्ध थे। सभी वेदपाल की मूर्खता के लिए उसे कोस रहे थे। सभी को यह विश्वास हो चला था कि दो दिनों के पश्चात वेदपाल को अवश्य ही फाँसी पर लटका दिया जाएगा। सभी साँस रोके दो दिनों का समय बीतने की प्रतीक्षा करने लगे। एक दिन बीता। धीरे-धीरे दूसरा दिन भी बीत चला। दूसरे दिन शाम के समय वेदपाल राजा के सामने उपस्थित हुआ और बोला- ''मैं अपनी बात का प्रमाण देने के लिए

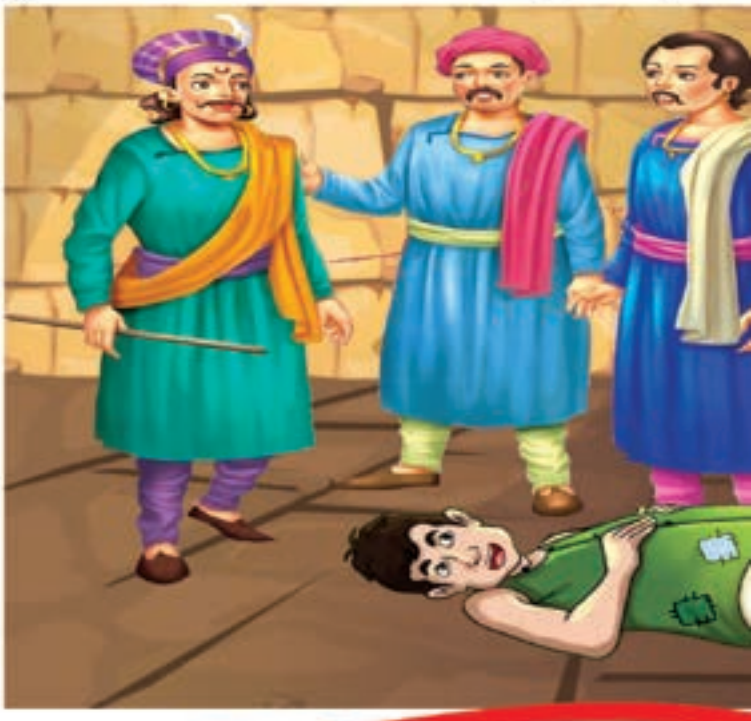

उपस्थित हूँ महाराज! लेकिन उसके लिए आपको मेरे साथ चलना पड़ेगा क्योंकि संसार के सबसे सुखी और धनवान व्यक्ति को यहाँ ला पाना संभव नहीं है।''

''ठीक है मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ।'' राजा ने कहा और सिंहासन से उतर पड़ा। आगे-आगे दो घोड़ों पर राजा तथा वेदपाल और उनके पीछे दूसरे मंत्रियों और राजा के अंगरक्षकों की टुकड़ी चल पड़ी। चलते-चलते वे राजधानी के शहरी क्षेत्र से बाहर निकल आए। काफी देर तक चलते रहने के बाद एक निर्जन स्थान पर एक तालाब के पास वेदपाल ने अपना घोड़ा रोक दिया।

''वह देखिए महाराज! वह रहा संसार का सबसे सुखी और धनवान आदमी।'' वेदपाल ने तालाब के दूसरे छोर पर स्थित उद्यान की ओर संकेत करते हुए कहा।

राजा ने उद्यान की ओर देखा तो पाया कि वहाँ एक पुराने मंदिर के बाहर एक पेड़ के नीचे चबूतरे पर फटे, पुराने कपड़े पहने एक व्यक्ति लेटा था और ऊँचे स्वर में कोई गीत गा रहा था। राजा ने क्रोध में लाल आँखों से वेदपाल की ओर देखा और उस व्यक्ति की ओर बढ़ चला! उसके पीछे-पीछे दूसरे मंत्री तथा अंगरक्षक भी आ गए। लेकिन अपने सामने राजा, मंत्रियों तथा सिपाहियों को देखने के पश्चात् भी उस व्यक्ति के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने न तो राजा को अभिवादन किया और न ही उठकर खड़ा हुआ। अपनी धुन में मग्न वह लेटा रहा और गीत गाता रहा। यह बात राजा को बहुत बुरी लगी।

''क्यों जी! तुम्हें पता है कि मैं कौन हूँ..... ?'' क्रोध से भरे राजा ने प्रश्न किया।

''वैसे तो आप चाहे कोई भी हों मेरे ऊपर कोई अंतर नहीं पड़ता। लेकिन आपकी वेशभूषा तथा आप के साथ आए लाव-लश्कर को देखकर पता लगता है कि आप शायद किसी देश के राजा हैं।'' उस व्यक्ति ने शांति से लेटे-लेटे उत्तर दिया।

''मेरे मंत्री वेदपाल का कहना है कि तुम इस संसार के सबसे सुखी और धनवान व्यक्ति हो। क्या यह बात सच है?'' राजा ने दूसरा प्रश्न किया।

''जी हाँ! मैं ही इस धरती का सबसे सुखी, और धनवान व्यक्ति हूँ। आप जानना चाहेंगे कि कैसे तो सुनिए। मेरा न कोई मित्र है न कोई शत्रु। मेरे मन में न किसी प्रकार का राग है न द्वेष। मुझे न तो किसी वस्तु की लालसा है न कोई इच्छा। मुझे न तो किसी और की सम्पत्ति हड़पने की कामना है न ही अपनी सम्पत्ति के छीने जाने का भय। मैं एक श्रमिक हूँ। सारे दिन परिश्रम करता हूँ और जो कुछ कमाता हूँ उससे भर पेट भोजन कर यहाँ इस मंदिर के आँगन में सोया रहता हूँ। मैं हर प्रकार की चिंताओं से मुक्त हूँ और संतोष रूपी अनमोल धन का स्वामी हूँ।

अत: निश्चित रूप से मैं ही इस संसार का सबसे सुखी और धनवान व्यक्ति हूँ।'' उस श्रमिक ने उत्तर दिया।

श्रमिक की बात सुनकर राजा का सारा क्रोध जाता रहा। श्रमिक की बात का अर्थ उसकी समझ में आ गया था। उसने वेदपाल की ओर देखते हुए कहा- ''तुम ठीक कहते हो वेदपाल! मैं ही भूल रहा था। सचमुच मैं ही इस संसार का सबसे कम सुखी और निर्धन व्यक्ति हूँ। आज तुमने मेरी आँखें खोल दी।''

राजा वापस अपनी राजधानी लौट आया। उस दिन के बाद वह पूर्णत: परिवर्तित हो गया। उसने जनता पर लगे उल्टे-सीधे कर समाप्त कर दिए और अपने पड़ौसी राज्यों से छल-कपट से ली भूमि वापस कर के शांतिपूर्वक रहने लगा। अब उसे वास्तविक सुख का अनुभव होने लगा था।

- लखनऊ (उ. प्र.)

आलेख (विज्ञापन)

अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल अधोसंरचना निर्माण में मध्यप्रदेश आगे

– दुर्गेश रायकवार

म.प्र. अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल अधोसंरचना विकास में अन्य राज्यों से आगे निकल गया है। अब एक जिले में एक खेल परिसर का विकास करने की योजना पर काम शुरू हो गया है। खेल और खिलाड़ियों को म.प्र. नई दिशा दे रहा है। साथ ही युवा कल्याण की दिशा में भी सुविचारित प्रयास हो रहे हैं। म.प्र. ने जहाँ राष्ट्रीय स्पोर्ट्स मैप में विशिष्ट स्थान बनाया है, वहीं युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने और स्व–रोजगार से जोड़ने की दिशा में भी अच्छा काम किया है। खेल अधोसंरचना विस्तार, प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार और खिलाड़ियों को प्रोत्साहन से उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त हुए हैं। खेल अकादमियों के संचालन, पुरस्कार, विशेष छात्रवृत्ति, नकद पुरस्कार और खेल संघों को खेल प्रतियोगिता के आयोजनों की शृँखला शुरू कर मध्यप्रदेश अब देश का स्पोर्ट्स–हब बन गया है। अन्य राज्य अब म.प्र. के इस खेल मॉडल का अनुसरण कर रहे हैं।

युवा कल्याण

म.प्र. में सरकारी नौकरियों के लिये चयनित लगभग ११ हजार उम्मीदवारों को नियुक्ति–पत्र सौंपे गये हैं। स्टार्ट–अप को प्रोत्साहित करने के लिये नई पहल के अन्तर्गत म.प्र. के स्टार्ट–अप को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में सहभागिता के लिये ५० हजार रुपये से डेढ़ लाख रुपये तक वित्तीय सहायता का प्रावधान किया गया है। मध्यप्रदेश में राज्य स्तरीय रोजगार दिवस के अवसर पर रिकॉर्ड ७ लाख युवाओं को ५ हजार करोड़ रुपये का स्व–रोजगार ऋण वितरित किया गया। राज्य शासन द्वारा अग्निवीर योजना में युवाओं का अधिक से अधिक चयन हो, इस उद्देश्य से ३६० घंटे प्रशिक्षण प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया है। मुख्यमंत्री सीखो–कमाओ योजना में फरवरी–२०२४ में ८ हजार चयनित प्रशिक्षणार्थियों को ६ करोड़ ६० लाख रुपये स्टाइपेंड सिंगल क्लिक के माध्यम से वितरित किये गये हैं।

खेल अकादमियों के संचालन में विभाग द्वारा १८ खेलों की ११ अकादमियाँ संचालित की जा रही है। खेल अकादमियों में ९९६ खिलाड़ियों को बोर्डिंग एवं डे–बोर्डिंग योजना के अन्तर्गत प्रवेश देकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा रही है।

भारत सरकार द्वारा मध्यप्रदेश के ३ खिलाड़ियों यथा शूटिंग खिलाड़ी ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर, हॉकी खिलाड़ी सुशीला चानू, केनोइंग–क्याकिंग की पैरा खिलाड़ी प्राची यादव को अर्जुन अवॉर्ड एवं हॉकी ओलंपियन के प्रशिक्षक श्री शिवेन्द्र सिंह को द्रोणाचार्य अवार्ड–२०२३ से सम्मानित किया गया। मध्यप्रदेश राज्य को २३ वर्ष बाद यह अवसर मिला है, जब मध्यप्रदेश के एक साथ ३ खिलाड़ियों को अर्जुन अवॉर्ड एवं एक प्रशिक्षक को द्रोणाचार्य अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। गोवा में ३७वीं राष्ट्रीय खेल में मध्यप्रदेश के ४१६ खिलाड़ियों द्वारा ३७ खेलों में प्रतिभागिता कर ११२ पदक (३७–स्वर्ण, ३६ रजत, ३९ काँस्य) प्राप्त कर पदक तालिका में चौथा स्थान प्राप्त किया। यह हमारे खिलाड़ियों का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है। खेलो इण्डिया यूथ गेम्स–२०२२ में मध्यप्रदेश तीसरे स्थान पर रहा था। एशियन गेम्स–२०२३ होंगजाउ चायना में मध्यप्रदेश ने पिछले एशियन गेम्स के मुकाबले ४ गुना अधिक पदक अर्जित किये थे।

खेलों में मध्यप्रदेश अन्य राज्यों के लिए रोल मॉडल

गुजरात, रास्थान, छत्तीसगढ़, जम्मू कश्मीर, मेघालय, उड़ीसा, गोवा, अंडमान–निकोबार, राज्यों के लिए मध्यप्रदेश रोल मॉडल बन गया है। इन राज्यों के प्रतिनिधि मध्यप्रदेश के स्पोर्ट्स अरेजमेंट्स एवं मैनेजमेंट का अध्ययन करने मध्यप्रदेश आये थे। अधिकांश राज्य मध्यप्रदेश के खेल मॉडल का अनुसरण कर रहे हैं।

खेलो एमपी यूथ गेम्स

खेलों इण्डिया यूथ गेम्स–२०२२ की तर्ज पर राज्य में खेलो एमपी यूथ गेम्स–२०२३ का आयोजन मध्यप्रदेश के सभी जिलों में किया गया, जिसमें १,६८,९८४ खिलाड़ियों द्वारा अपने क्षेत्रों का

R. O. No. D16017/24

प्रतिनिधित्व किया गया। यह आयोजन निरंतर प्रतिवर्ष किया जायेगा। भोपाल को स्पोर्ट्स हब तथा प्रदेश में स्पोर्ट्स टूरिज्म को बढ़ाने के लिये नाथू-बरखेड़ा स्पोर्ट्स साईंस सेन्टर की स्थापना की जा रही है। प्रथम चरण में एथलेटिक्स सिंथेटिक ट्रेक मय फुटबॉल स्टेडियम एवं हॉकी सिंथेटिक टर्फ मय पेवेलियन द्वितीय चरण में 'इंडोर स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स' का निर्माण तथा तृतीय चरण में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है। इसके लिए विभाग द्वारा ९८५ करोड़ ७६ लाख रुपये का व्यय किया जायेगा।

खेल अधोसंरचना का विस्तार

अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय स्तर की खेल अधोसंरचना निर्माण में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्यों की श्रेणी में है। प्रदेश में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के १८ हॉकी टर्फ निर्मित है तथा ३ हॉकी टर्फ निर्माणाधीन है। इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के १० एथलेटिक्स सिंथेटिक टर्फ निर्मित है। विभाग के स्वामित्व के १०७ स्टेडियम/खेल प्रशिक्षण केन्द्र निर्मित है तथा ५६ निर्माणाधीन है। ३७ वर्षों के बाद टोक्यो ओलम्पिक-२०२० में मध्यप्रदेश के खेल अकादमियों के खिलाड़ियों द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन कर १० खिलाड़ियों द्वारा सहभागिता की गई एवं पुरुष हॉकी में एक काँस्य पदक प्राप्त किया गया। पेरिस ओलम्पिक और पैरालम्पिक्स में भाग लेने वाले भारतीय दल में अब तक मध्यप्रदेश के ४ खिलाड़ी-ऐश्वर्य प्रताप सिंह शूटिंग (ओलम्पिक), प्राची यादव, पूजा ओझा, क्याकिंग-केनोइंग, कपिल परमार ब्लाइंड जूडो (पैरालम्पिक) का चयन हो चुका है। अभी और खिलाड़ियों के चयनित होने की संभावना है।

माँ तुझे प्रणाम

शासन द्वारा प्रदेश के युवाओं में देश की सीमाओं की सुरक्षा के प्रति जागृति लाने, राष्ट्र के प्रति समर्पण, साहस की भावना जाग्रत करने एवं युवाओं को सेना तथा अर्द्ध सैनिक बलों के प्रति आकर्षित करने के उद्देश्य से 'माँ तुझे प्रणाम' योजना वर्ष-२०१३ में शुरू की गई। योजना में प्रदेश के १५ से २५ वर्ष के आयु के युवाओं को चयनित कर देश की अन्तरराष्ट्रीय सीमा भ्रमण के लिए ले जाया जाता है। योजना अन्तर्गत युवाओं को लेह-लद्दाख, कारगिल-द्रास, आर.एस.पुरा, जम्मू-कश्मीर, वाघा-हुसैनी वाला पंजाब, तनोत माता का मंदिर लोंगेवाल, बीकानेर, बाड़मेर राजस्थान, कोच्ची केरल नाथूला दर्रा सिक्किम, तुरा मेघालय, पेट्रापोल, जयगांव पश्चिम बंगाल, अंडमान-निकोबार, केवड़िया गुजरात और कन्याकुमारी तमिलनाडू की अनुभव यात्रा करवायी गई। माँ तुझे प्रणाम योजना में शुरू से अब तक मध्यप्रदेश के १५,५१६ युवाओं को देश की विभिन्न राष्ट्रीय सीमाओं की अनुभव यात्रा करवाई जा चुकी है।

वन डिस्ट्रिक्ट-वन स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स

मध्यप्रदेश में वन डिस्ट्रिक्ट-वन स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स योजना शुरू की जाएगी। इसमें प्रत्येक जिले में एक स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स का निर्माण किया जाएगा। ब्रेक-डांस अकादमी की स्थापना की जा रही है। ई-स्पोर्ट्स अकादमी एवं उज्जैन में मलखम्ब व जिम्नास्टिक अकादमी की स्थापना की जाना प्रस्तावित है। वन डिस्ट्रिक्ट-वन स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स योजना अन्तर्गत भविष्य की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए खेल अधोसंरचना को ४ श्रेणी राजभोगी शहर, संभागीय मुख्यालय, बड़े जिला मुख्यालय, छोटे जिला मुख्यालय में स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स स्थापित करने की कार्य-योजना तैयार की जायेगी। खेल संघों की खेल प्रतियोगिताओं एवं पंजीकृत खिलाड़ियों की जानकारी ऑनलाइन की जायेगी।

मध्यप्रदेश में खेल अधोसंरचना का निर्माण, जन निजी भागीदारी योजना से किया जाना है। मध्यप्रदेश के प्रतिभावान खिलाड़ियों का खेल अकादमियों में चयन हो सके, इसके लिये प्रत्येक खेल अकादमी में न्यूनतम ५ फीडर सेंटर स्थापित किये जायेंगे। माह अक्टूबर-२०२४ में आयोजित नेशनल गेम्स, उत्तराखण्ड-२०२४ में मध्यप्रदेश से अधिकाधिक खिलाड़ियों द्वारा सहभागिता कर पदक अर्जित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। ओलम्पिक गेम्स-२०२४ में पुलिस विभाग में प्रतिवर्ष उत्कृष्ट खिलाड़ियों को सब-इंसपेक्टर के १० पद एवं काँस्टेबल के ५० पदों पर नियुक्ति की जायेगी।

R. O. No. D16017/24

जादू

चित्रकथा-

घन्शू ने मोलू को बताया-
मैं वो जादू सीख रहा हूं...
..जिससे चीजें गायब करके फिर से ला दी जाएं..
कमाल है..
ये लो मेरी सोने की चैन इसे गायब करके दिखाओ..
तो देखो... शूं..
बहुत अच्छे, अब चैन वापस लाओ...
माफ करना, मैं जादू चीजें गायब करने तक ही सीख सका हूं..

नदियाँ

– अंकुश्री

पहाड़ से उतर आती नदियाँ,
समतल में बह जाती नदियाँ।
गाँव–नगर बसाती नदियाँ,
सभी तरफ बह जाती नदियाँ।
खेतों को लहराती नदियाँ,
सबकी प्यास बुझाती नदियाँ।
नई मिट्टी है लाती नदियाँ,
जीवों को पनपाती नदियाँ।
बारिश में उफनाती नदियाँ,
सब घर–बार बहाती नदियाँ।
गर्मी में सूख जाती नदियाँ,
हाहाकार मचाती नदियाँ।
खाली तट जो पाती नदियाँ,
सूखे से बच जाती नदियाँ।
सबको है नहलाती नदियाँ,
बच्चों को है भाती नदियाँ।

– राँची (झारखण्ड)

कहानी

सच्चाई की जीत

– टीकेश्वर गब्दीवाला

नवमी कक्षा थी। हिंदी विषय का कालखंड था। थोड़ा कोलाहल था कक्षा में; क्योंकि उतने ही समय बच्चे लघुविश्राम के बाद अपनी-अपनी जगह पर बैठ रहे थे। कुछ बच्चे अध्यापक भावेश चंद्राकर जी आ रहे होंगे सोचकर खिड़की से झाँक-झाँक कर देख रहे थे। करुणा तो दरवाजे पर ही जाकर शिक्षक कक्ष की ओर देख रही थी कि अध्यापक भावेश चंद्राकर जी आ गए। बोले- ''क्यों क्या हुआ जी, क्या देख रही हो करुणा?''

''कुछ नहीं आचार्य जी! करुणा सकपका गयी। तुरंत अपने स्थान पर बैठी। फिर अध्यापक चंद्राकर जी कुर्सी के पास आए। मेज पर टिककर बच्चों की ओर देखते हुए बोले- ''आज कौन-सा पाठ पढ़ना है, मालूम है न। आज जो पाठ पढ़ना है, उसका मैंने कल थोड़ा-सा उल्लेख किया था। है न?''

''जी आचार्य जी! हम आज 'सच्चाई की जीत' पाठ पढ़ेंगे आजार्य जी!'' सामने बैठे दो-चार बच्चों ने कहा। पीछे के बच्चों ने हाँ में सिर हिलाया। चंद्राकर जी ने श्यामपट पर बड़े अक्षरों में पाठ का नाम लिखा- 'सच्चाई की जीत'। बच्चों का ध्यान पुस्तक के साथ-साथ श्यामपट पर भी गया। फिर चंद्राकर जी पुस्तक लेकर पाठ प्रारंभ करने के पहले सत्य अर्थात् सच्चाई पर कुछ बोलने लगे- ''सत्य एक बड़ी अनमोल वस्तु है। सत्य यानी सच्चाई अपनी जगह पर अडिग होती है। सत्य, असत्य से कभी हार नहीं मानता। हमारी पौराणिक कथाओं में भी सत्य की विजय का कई स्थानों पर उल्लेख है। इतिहास की अनेक गाथाओं में भी सच्चाई ने अपनी शक्ति का लोहा मनवाया है। असत्य को हमेशा पराजय का मुँह देखना पड़ा है। बच्चो! हमारी राष्ट्रीय ध्येय वाक्य है- 'सत्यमेव जयते।' वे और बता ही रहे कि पीछे बैठे गर्वित पर उनकी दृष्टि गयी। आवाज लगाई- ''अरे! गर्वित! क्या खा रहे हो?''

''कुछ नहीं आचार्य जी! गर्वित तपाक से बोला।

''देखो बेटा! तुम झूठ मत बोलो। मैं कुछ समय से देख रहा हूँ। तुम कुछ तो अवश्य खा रहे हो। झूठ नहीं बोलना चाहिए।'' चंद्राकर जी का सस्नेह स्वर निकला।

''नहीं.. आचार्यजी! सच, मैं कुछ नहीं खा रहा हूँ।'' बड़े निश्चिंतता के साथ गर्वित बोला।

''बेटा! झूठ मत बोलो। कक्षा में पढ़ाई-लिखाई के समय इस तरह कुछ खाना अच्छी बात नहीं है।''

''पर मैं तो कुछ भी नहीं खा रहा हूँ आचार्यजी!'' गर्वित बोला।

''झूठ नहीं बोलना। सत्य का पाठ रहे हो।'' चंद्राकर जी ने पुन: स्नेह से समझाते हुए कहा।

''नहीं आचार्य जी! मैं कुछ भी नहीं खा रहा हूँ। सच में।'' अपनी बात पर गर्वित अडिग रहा।

''मुँह खोलो...।'' चंद्राकर जी गर्वित के पास जाकर थोड़ा सख्त होते हुए बोले।

''आँ....!'' गर्वित ने अपना मुँह खोला।

गर्वित का खाली मुँह देखकर चंद्राकर जी को बड़ा अजीब-सा लगा; फिर भी उन्हें लगा कि यह लड़का झूठ बोल रहा है। बोले- ''ठीक है, बैठो बेटा! पर मुझे अब भी नहीं लगता है कि तुम सच बोल रहे हो।''

''नहीं आचार्यजी! मैं सच में कुछ भी नहीं खा रहा था; और न ही खा रहा हूँ।'' कहते हुए गर्वित बैठा गया। चंद्राकर जी ने गर्वित को अब अधिक कुछ बोलना उचित नहीं समझा। श्यापपट के पास आये। पढ़ाना प्रारंभ किया- ''बच्चो यह जो पाठ है 'सच्चाई की जीत' एक बहुत सुंदर प्रेरक कहानी है। इस पाठ के लेखक हैं श्री आशुतोष पटेल जी। लेखक ने बहुत ही अच्छे ढंग से सत्य की महत्ता का उल्लेख किया। यह

पाठ कहानी के तत्व-कथानक या कथा वस्तु, कथोपकथन या संवाद, देशकाल या वातावरण, पास या चरित्र-चित्रण, भाषा-शैली व उद्देश्य की दृष्टि से पूर्ण है। बच्चे शांतिपूर्वक बैठे थे। सबके सामने पुस्तकें थीं। सबका ध्यान अध्यापक चंद्राकर की ओर था। 'सच्चाई की जीत' प्रथम पैराग्राम को इन शब्दों के साथ कुछ पंक्तियाँ पढ़कर सुनाई- ''सत्य एक ऐसा दीपक है जिसकी लौ को झूठ की आँधी कभी नहीं बुझा सकती।'' चंद्राकर जी हर शब्द का अर्थ एवं वाक्यों में यथोचित विराम शब्दों का प्रयोग का उल्लेख करते हुए बच्चों को श्यामपट पर लिख-लिखकर समझा रहे थे। जहाँ आवश्यकता होती बच्चों से प्रश्न करते। बच्चे भी अपने शब्दों में उत्तर देने का प्रयास करते। पठन-पाठन बढ़िया चल रहा था। चंद्राकर जी पूरे आत्मविश्वास के साथ अध्यापन कर रहे थे; समझा रहे थे। तभी उन्होंने एक लड़के से पाठ से संबंधित प्रश्न किया- ''अच्छा अनुराग। राजेन्द्र ने खेत पर जाकर सुनीता को कौन-सी बात बताई?''

''आचार्यजी! खेत पर जाकर राजेन्द्र ने सुनीता से कहा कि तुम्हारे भैया मनीष ने तुम्हें जल्दी घर आने के लिए कहा है।'' अनुराग ने अटकते हुए उत्तर दिया।

''बिल्कुल सही है। अच्छा प्रयत्न किया तुमने। अनुराग के लिए ताली हो जाए।'' चंद्राकर जी ने हाथ हिलाते हुए कहा। कक्षा में ताली बजी। चंद्राकर जी ने फिर पूछा- ''अच्छा शालिनि! मनोज ने गोपाल को पूरी सच्चाई बताई या नहीं। उसने झूठ तो नहीं बोला?''

''नहीं आचार्यजी! मनोज ने कोई झूठ नहीं बोला। उसकी पूरी बात में सच्चाई थी। मनोज को झूठ बोलना उचित नहीं लगा।'' शालिनी बोली।

''क्यों झूठ नहीं बोला मनोज? चलो बताओ नरेन्द्र?'' चंद्राकर जी फिर प्रश्न किया।

''क्योंकि मनोज जानता था आचार्य जी! कि यदि वह झूठ बोलेगा तो यतीन्द्र को सजा मिलेगी। सच बोल कर वह यतीन्द्र को बचाना चाहता था।'' नरेन्द्र ने

बेअटक जवाब दिया। फिर चंद्राकर जी बच्चों को फूल के तीन पर्यायवाची शब्द– ''सुमन, कुसुम, पुष्प...'' बताते हुए पूछा– ''चलो क्षमा बताओ तो फूल को और क्या बोलते हैं जी ?''

''सरिता।'' खड़े होकर क्षमा इधर–उधर देखते हुए बोली।

''नहीं ! गलत। चंद्राकर जी मुस्कुराते हुए बोले।

''अवनि...!''

''न...! न....!....''

शिखा का भी बोलने का मन कर रहा था। बोली– ''पुहुप!''

''हाँ.... बिल्कुल सही। चलो एक और पर्याय बताओ फूल का..... स्वयं से खड़े होकर कोई भी।'' टेबल से पुस्तक लेते हुए चंद्राकर जी बोले।

''प्रसून!'' राहुल बड़ी धीमी आवाज में बोला।

''आचार्य जी! राहुल कुंजी देख कर बोला।'' मनोरम ने राहुल को कुंजी के पन्ने पलटते हुए देख लिया था।

''क्या रे राहुल... ? क्यों लाये हो तुम कुंजी ?'' बोलते–बोलते चंद्राकर जी को हँसी आ गयी– ''क्यों राहुल! क्या सच में तुमने कुंजी देखी ?''

''जी आचार्य जी!'' राहुल को घबराहट हुई।

''नहीं.... कोई बात नहीं। कुंजी देखकर किसी प्रश्न का उत्तर देना ठीक नहीं है। पर तुमने सच कहा– ''झूठ नहीं बोला। यह बहुत ही अच्छी बात है। चंद्राकर जी ने अध्यापन के समय विराम चिह्नों के अन्तर्गत पूर्ण विराम, अल्प विराम, अर्द्ध विराम, अवतरण चिह्न, के उचित प्रयोग के संबंध में बताये। तद्भव व तत्सम शब्दों का भी उल्लेख किया। उदाहरण के तौर पर उन्होंने तद्भव–मोर, आम, आग, घर का तत्सम क्रमश: मयूर, आम्र, अग्नि, गृह बताया। तभी एक वाक्य में ''अपना उल्लू सीधा करना'' का आशय समझाते हुए अध्यापक चंद्राकर जी ने बताया कि यह एक मुहावरा है, जिसका अर्थ अपना ही काम निकालना है। इसे वाक्य में प्रयोग इस तरह कर सकते हैं– ''अपना उल्लू सीधा करने के लिए राजू भोपाल गया।'' अध्यापक चंद्राकर जी अपने अध्यापन के समय क्षेत्रीय भाषा के शब्दों का प्रयोग के संदर्भ में भी बताते जा रहे थे। बीच–बीच में कुछ हास्य–विनोद चलता था, जिससे बच्चे भी बहुत प्रसन्न थे। 'सच्चाई की जीत' पाठ का अंत करते हुए बोले– ''सत्य को कभी झुठलाया नहीं जा सकता। असत्य अधिक समय तक नहीं टिक सकता। सत्य का असत्य अर्थात् झूठ बाल भी बाँका नहीं कर सकता। बच्चो! हमेशा याद रखना कि झूठ बोलकर व्यक्ति अपनी समस्या का त्वरित निदान कर सकता है; पर एक सच्चे व्यक्ति की समस्या का निवारण स्थायी ही होगा।'' अध्यापक चंद्राकर जी कह ही रहे थे कि कालखंड समाप्ति की घंटी लगी। अपनी बात को समाप्त करते हुए कहा कि– ''इस पाठ के अंत में दिये गये प्रश्नों को बना कर लाना। यह तुम सबका गृहकार्य है।'' अध्यापक चंद्राकर जी कक्षा से निकल रहे थे कि उन्हें एक पुकार सुनाई दी। रुककर देखा। गर्वित उनके समीप आया, और बोला– ''आचार्य जी! क्षमा! मुझसे भूल हो गयी। आचार्य जी! आपने पूछा कि क्या खा रहे हो, उस समय में च्विंगम खा रहा था। मुझ तक आपके पहुँचने से पहले मैं उस च्विंगम को निगल गया। झूठ बोला आचार्य जी मैंने आपसे। क्षमा आचार्य जी! पर आज की कहानी से सीख मिली कि हमें कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए।''

''बहुत अच्छा गर्वित! तुम्हें अपनी भूल का अनुभव तो हुआ। अपनी झूठ बोलने वाली बात को स्वीकार कर रहे हो। अच्छा लगा, 'सच्चाई की जीत' ने तुम्हारी आँखें खोल दी। तुम्हारी जिह्वा पर झूठ था। जो निकलता गया; तुम्हारे अंतस में सच्चाई थी। पूरे कालखंड के समाप्त होने तक दोनों में द्वंद्व चलता रहा। अंतत: सच्चाई की जीत हुई। अब कभी झूठ मत बोलना।'' गर्वित के सिर पर हाथ फेरते हुए अध्यापक चंद्राकर जी ने उसे अपने स्थान पर बैठने के लिए संकेत किया।

– घोटिया, (छत्तीसगढ़)

मिलकर हरा दिया

– रजनीकांत शुक्ल

चलो जल्दी दीदी चलो अभी कितनी देर और लगेगी। चिन्मय ने चारु से कहा।

मैं तो तैयार हूँ माँ ही नहीं निकल रहीं हैं। चारू ने माँ की ओर देखते हुए अपने छोटे भाई चिन्मय को उत्तर दिया।

अरे बाबा चलती हूँ। सामान तो ले लूँ। कहीं जल्दबाजी में आवश्यक सामान घर पर ही न छूट जाए।

कुछ ही देर में वे तीनों लोग घर से निकल गए अब उनके कदम स्थानीय रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ रहे थे। यह मुंबई का न्यू मैरीन लाइन्स क्षेत्र था। आज नेहा शर्मा को अपने दोनों बच्चों चारु और चिन्मय के साथ लोकल ट्रेन से जाना था।

उस दिन बुधवार था। सुबह की ट्रेन में तो कार्यालय जाने वालों की भीड़ होती है इसलिए उन्होंने भीड़ वाला वह समय छोड़ दिया और दोपहर में घर से निकलने का निश्चय किया। इस समय दोपहर ही थी। ट्रेन का समय पता करके ही वे लोग घर से बाहर निकले थे। स्टेशन पर पहुँचकर उन्होंने देखा कि ट्रेन के आने में अभी समय है।

वे प्रतीक्षा करने लगा। कुछ ही देर में लोकल ट्रेन आ गई। उनके सामने जो डिब्बा आया वे उसी की ओर बढ़ गईं। यहाँ पर ट्रेन अधिक देर तक नहीं ठहरती थी। इसलिए वह उसी में चढ़ गईं। संयोग से वह डिब्बा लगभग पूरी तरह खाली था। उसमें लगभग साठ वर्ष की एक वृद्ध महिला बैठी हुई थी। पहले तो नेहा शर्मा ने सोचा कि हम लोग डब्बे को बदल लें। फिर उन्हें लगा कि पता नहीं दूसरा डिब्बा कहीं भरा हुआ न

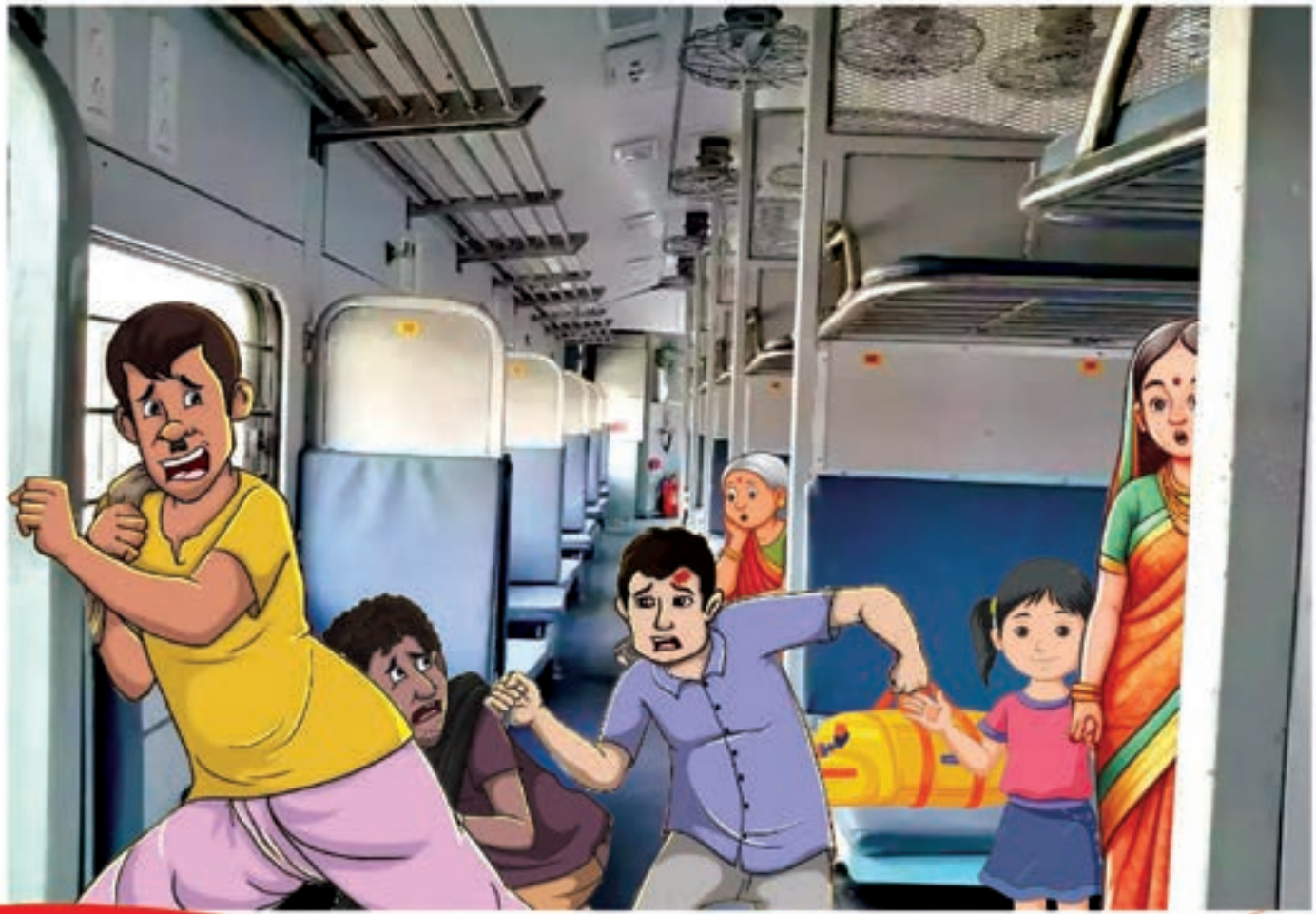

हो या बच्चे साथ में हैं डिब्बा बदलने के चक्कर में कहीं गाड़ी छूट न जाए। यह सोचकर वे उसी डिब्बे में बैठीं रहीं।

उनका सोचना सही था क्योंकि तभी ट्रेन ने धीरे-धीरे स्टेशन छोड़ना शुरू कर दिया था। उन्हें लगा कि उन्होंने डिब्बा न बदलने का निर्णय लेकर अच्छा ही किया। ट्रेन की गति बढ़ी वह अभी प्लेटफॉर्म पर ही थी तभी चलती हुई ट्रेन में एक-एक करके दो लड़के दौड़ते हुए चढ़ गए। वे दरवाजे के पास ही लटके हुए थे। नेहा शर्मा ने देखा कि वे बार-बार कनखियों से उन लोगों की ओर देख रहे थे।

लोकल ट्रेन के स्टेशन पास-पास ही होते हैं। ट्रेन की पूरी तरह से गति पकड़ते ही वे दोनों दरवाजा छोड़कर डिब्बे में अन्दर की ओर बढ़ने लगे। उस समय उस डिब्बे में वे दो महिलाएँ और दो बच्चे चारु दस वर्ष और चिन्मय सात वर्ष ही थे। नेहा और बच्चों ने इस प्रकार उन्हें आगे बढ़ता देखा उनके इरादे ठीक नहीं लग रहे थे। अब उनमें से एक ने अपने हाथ में चाकू निकाल लिया था। उसमें से एक ने आगे बढ़ झपटकर वृद्ध महिला का हाथ में पकड़ा हुआ बैग छीन लिया।

दूसरा नेहा शर्मा की ओर बढ़ा और उसने नेहा शर्मा के हाथ में पकड़े बैग को अपने कब्जे में ले लिया। उन नन्हें से बच्चों की ओर से वे निश्चिन्त थे कि हाथ में चाकू देखकर और अपने से बड़े उन दोनों को देखकर वे बेचारे तो चुप रह ही जाएँगे।

किन्तु वे गलत थे। माँ के बगल में बैठी नन्ही चारु ने झपटकर उस बैग को बदमाश से छीनकर फिर से अपने कब्जे में ले लिया। यह उन दोनों के लिए बिलकुल अप्रत्याशित था। उसने पलटकर चारु से बैग छीनना चाहा किन्तु चारु की बैग पर पकड़ इतनी मजबूत थी कि वह लुटेरा अपने सभी प्रयासों के बाद भी उस बैग को चारु से नहीं छुड़ा पाया।

अब उसने चारु के लम्बे बालों को जोर से पकड़ा और उसे पीटना प्रारंभ कर दिया। किन्तु फिर भी चारु की बैग से पकड़ ढीली नहीं हुई। तभी उसने ताकत लगाकर चारु को सीट से नीचे की ओर खींच लिया। अब वह चारु की खींचकर दरवाजे की तरफ ले जाने लगा। उसका उद्देश्य चारु को चलती ट्रेन के दरवाजे से बाहर फेंकने का भय दिखाकर या फेंककर उस बैग को छीन लेना था। जैसे ही उसने चारु को दरवाजे की ओर धकेला। नन्हें चिन्मय ने झुके हुए उस चोर के लम्बे बालों को कसकर पकड़ लिया और उन्हें पूरी ताकत से अपनी ओर खींच लिया। साथ ही उसने झुककर उसके शरीर के अपने मुँह के सामने पड़े भाग को दाँतों से पूरी ताकत से काट लिया।

जिससे वह बदमाश दर्द से बिलबिला गया और उसके हाथ में पकड़ा हुआ चाकू नीचे फर्श पर गिर गया। चिन्मय ने उसे फुर्ती से उठाकर ट्रेन के दरवाजे से बाहर फेंक दिया। यह सब एकदम इतनी तेजी से हुआ कि दूसरे बदमाश को समझने का अवसर ही नहीं मिल पाया। अब उसने चिन्मय को पकड़ा और जोर का धक्का दिया जिससे चिन्मय लड़खड़ाता हुआ सीट से जा टकराया। उसका सिर जोर से सीट से टकराया जिससे उसके सिर में चोट लग गई थी।

लेकिन इस धक्का देने के क्रम में उस बदमाश के हाथ से उस वृद्ध महिला का बैग छूटकर नीचे गिर गया जिसे चिन्मय ने तत्काल अपने कब्जे में ले लिया और कसकर अपने हाथों में जकड़ लिया। उन बदमाशों को इन दोनों बच्चों की ओर से बड़ी कड़ी टक्कर मिली थी। उन्हें लेने के देने पड़ चुके थे। यकायक ट्रेन की गति धीमी होने लगी। शायद अगला स्टेशन निकट आने वाला था। दोनों महिलाएँ सहायता के लिए चीखे जा रहीं थीं।

अगले स्टेशन पर वे पकड़े जाए इससे जान बचाकर भागने में ही उन्होंने अपनी भलाई समझी। ट्रेन प्लेटफॉर्म पर रूके इससे पहले चलती ट्रेन से कूदकर वे दोनों रफूचक्कर हो चुके थे। चिन्मय के

सिर में सीट से टकरा जाने के कारण चोट आ गई थी। इसलिए उपचार और घटना की रिपोर्ट लिखवाने के लिए वे लोग अगले स्टेशन पर उतर गए।

घटना का ब्यौरा जानकर सभी ने नन्हे बहादुर बच्चों की प्रशंसा की। समाचार-पत्रों में और वीरता पुरस्कार के लिए उनका नाम गया। बहादुरी और हिम्मत के साथ हथियारबंद बदशामों का सफलता पूर्वक सामना कर उन्हें भगाने के लिए मजबूर कर देने के लिए चारु और चिन्मय को वर्ष २००२ के बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया।

२००३ में गणतंत्र दिवस के अवसर पर उन्हें देश की राजधानी दिल्ली में आमंत्रित किया गया। वहाँ देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उन्हें राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया। वे दोनों हाथी पर बैठकर राजपथ पर निकलने वाली गौरवशाली परेड का हिस्सा भी बने।

नन्हे मित्रो!

हरदम हम तैयार रहें और कभी न हिम्मत हारें,
गिरें उसी आवाज पे हम, जब हमको कोई पुकारे।
डरें न हम मुश्किल हो कुछ भी, सोचें नहीं विचारें,
मौके पर ही वार करें हम, हर संकट को टारें।।

– नई दिल्ली

जानकारी

शब्दों का रोचक संसार

– ललित नारायण उपाध्याय

आइये यह भी जानते चलें कि निम्नलिखित कुछ शब्द किस प्रकार मजेदार होते हैं–

आपके शरीर के ये अंग– कान, मुँह, हाथ, पाँव, होंठ, अँगूठा, गाल, मस्तिष्क, नाखून। पुलिंग शब्द हैं।

अब आइए इन शब्दों को देखें– कलाई, जीभ, आँख, नाक, ठोढ़ी, जाँघ, टाँग, नस तथा नाड़ी। ये शब्द स्त्रीलिंग हैं।

इन वृक्षों और फलों के नामों को देखिए–

पीपल, आम, शीशम, सागवान, नींबू, अशोक, देवदार, बड़, अनार, केला, सेब, संतरा। ये सब पुलिंग वाची हैं।

परंतु फल होकर भी नाशपाती, लीची और इमली स्त्रीलिंग वाची माने जाते हैं।

इन रत्नों को पहिचानिए–

हीरा, मोती, नील, मूँगा, जवाहर, लाल और पुखराज ये सब संज्ञा शब्द पुलिंग वाची हैं।

परंतु दूसरा एक रत्न मणि यह स्त्रीलिंग वाची है।

पानी, घी, तेल, शर्बत और दूध तो आप रोज पीते–खाते हैं। ये पुलिंग संज्ञाएँ हैं जबकि चाय, स्याही और छाछ स्त्रीलिंग वाची हैं।

गेहूँ, चावल, जौ, बाजरा, तिल और चना पुलिंग शब्द हैं, ये बोये जाते हैं और अपने समान फसल पैदा करते हैं परंतु दूसरी ओर–मक्की, मूँग, ज्वार और अरहर स्त्रीलिंग वाची हैं। जबकि ये भी बोने पर अपने समान बीजों को जन्म देते हैं।

सोना, लोहा, ताँबा, सीसा, फौलाद, पीतल और टीन शब्द पुलिंग वाची हैं, परंतु धातुओं में चाँदी स्त्रीलिंग वाची है।

प्राय: देशों और जलस्थल वाले भागों के नाम पुलिंग होते हैं– जैसे भार, रूस, चीन, जापान, अमेरिका, रेगिस्तान, द्वीप, सागर, सरोवर, आकाश, पाताल, प्रांत देश और घर। परंतु इन सबको जन्म देने वाली पृथ्वी स्त्रीलिंग शब्द है। उसी प्रकार झील, नदी और घाटी स्त्रीलिंग हैं। यहाँ तक कि जनता भी।

कमीज, पतलून (पेंट) जांघिया, धोती और पगड़ी तथा बनियान प्राय: पुरुष पहनते हैं, ये भी स्त्रीलिंग हैं।

जबकि स्त्रियों द्वारा पहनी जाने वाली निम्न वस्तुएँ पुलिंग हैं– दुपट्टा, कड़ा, लौंग, हार, नथ आदि। है न मजेदार, यह शब्द संसार?

– खण्डवा (म. प्र.)

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

सभी प्रतियोगिताओं के लिए सामान्य नियम

* एक प्रतियोगिता हेतु एक ही प्रविष्टि भेजें।
* प्रविष्टि पर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम, अपना पूरा नाम पता एवं व्हाट्सएप नंबर अवश्य लिखें।
* रचनाएँ सुवाच्य अक्षरों में लिखी या कम्प्यूटर पर टाइप की गई हो।
* प्रविष्टि संपादक देवपुत्र- ४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म. प्र.) पर डाक द्वारा या ईमेल- editordevputra@gmail.com पर (व्हाट्सएप पर नहीं) ३१ जनवरी २०२५ के पूर्व हमें अवश्य प्राप्त हो जाएँ।
* निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।
* पुस्तकों को छोड़कर सभी रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार देवपुत्र के पास सुरक्षित रहेगा।
* कृपया रचनाओं के स्वरचित, स्वयं द्वारा अनूदित व मौलिक होने का स्वयं द्वारा प्रमाणित पत्र अवश्य भेजिए।

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२४

'देवपुत्र' के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम शंकर भवालकर जी की पावन स्मृति में आयोजित यह प्रतियोगिता केवल बारहवीं कक्षा तक के बच्चों के लिए है। बच्चे अपने किसी भी मन पसंद विषय पर अपनी स्वयं की बनाई हुई 'बाल कहानी' इस प्रतियोगिता के लिए भेज सकते हैं। इस प्रतियोगिता हेतु पुरस्कार निम्न प्रकार से हैं-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	११००/-	१०००/-	५००/-५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२४

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार स्व. डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से प्रायोजित यह पुरस्कार जनवरी २०२४ से दिसम्बर २०२४ के मध्य प्रकाशित **'हिन्दी बाल कविता की पुस्तक'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कार हेतु प्रविष्टि स्वरूप कोई भी रचनाकार अपनी 'बाल कविता' की प्रकाशित कृति की ३ प्रतियाँ प्रेषित करें। पुरस्कृत कृति के रचनाकार को प्रमाण-पत्र सहित ५०००/- पुरस्कार निधि प्रदान की जाएगी।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२४

वरेण्य बाल साहित्य सर्जक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष **किसी भी भारतीय भाषा से हिंदी में अनुवाद की गई बाल कहानी** विषय के रूप में निश्चित की गई है। पुरस्कार अनुवादक को प्रदान किया जाएगा। मूल कहानी के साथ आपकी एक सर्वश्रेष्ठ अनूदित बाल कहानी प्रविष्टि स्वरूप आमंत्रित है। पुरस्कार हैं-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	१२००/-	१०००/-	५००/-५००/-

केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२४

वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री रमेश गुप्ता द्वारा स्थापित केशर पूरन स्मृति पुरस्कार हेतु जनवरी २०२४ से दिसम्बर २०२४ के मध्य देवपुत्र के पुस्तक परिचय स्तंभ में प्रकाशित पुस्तकों में से २१००/- का पुरस्कार निर्णायकों द्वारा चयनित किसी एक सर्वश्रेष्ठ कृति को प्रदान किया जाएगा।

खतरे का काम!

चित्रकथाः देवांशु वत्स

पुस्तक परिचय

सोहा पढ़ती रोज कहानी
मूल्य- १५०/-

डॉ. आर. पी. सारस्वत बाल मन के पारखी रचनाकार हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आपने ३३ विविधवर्णी बाल कविताएँ प्रस्तुत की हैं जो बच्चों में सरस आनंद की सृष्टि करती हैं।

प्रकाशक- अविचल प्रकाशन १५, वृन्दाविहार, निकट अमृत आश्रम, हल्द्वानी -२६३१३९ (उत्तराखण्ड)

हमारे जीवन के सितारे
मूल्य- १६०/-

डॉ. शील कौशिक समकालीन बाल साहित्य संसार का स्वयं एक जगमगाता सितारा है। इस पुस्तक में आपने नए और पुराने भारत के चयनित वैज्ञानिकों की प्रेरक जीवनियाँ प्रस्तुत की हैं।

प्रकाशक- अद्विक पब्लिकेशन, ४१ हसनपुर, आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-११००९२

सूरज का घोड़ा
मूल्य- २२०/-

वरिष्ठ बालसाहित्यकार राजेन्द्र निशेश यह पुस्तक उनका पाँचवाँ बाल कविता संग्रह है। बाल कविताओं के कुशल सर्जक की अनूठी काव्य प्रतिभा का दर्शन कराने वाली यह कृति ७० से अधिक बाल कविताओं का खजाना है।

प्रकाशक- वनिका प्रकाशन बी-१४, आर्य नगर, नई बस्ती, बिजनौर-२४६७०१ (उत्तर प्रदेश)

हुलसी चिरमी लिख लिख पाती
मूल्य- २००/-

विमला नागला बालसाहित्य की विभिन्न विधाओं में सृजन करती है इस पुस्तक में आपने साहित्य की एक महत्वपूर्ण प्राचीन विधा 'पत्र लेखन' के स्वरूप में रोचक शीर्षक व रुचिकर विषयों को बाल सुलभ शब्द व शैली में प्रस्तुत किया है।

प्रकाशक- साहित्यागार धामानी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३ (राजस्थान)

दुनिया के नक्शे नक्शों की दुनिया
मूल्य- २५०/-

नक्षों का परिचय प्राय: विद्यार्थी जीवन में सब बच्चों को मिलता है, बड़े होने पर वे जीवन से प्राय: दूर होते जाते हैं और बहुत कम लोगों को उनकी आवश्यकता या समझ रह जाती है लेकिन नक्शे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। नक्शों को रोचक ढंग से साहित्यिक स्वरूप में बच्चों के लिए प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।

प्रकाशक- के. के. पब्लिकेशन्स् ४८०८/२४ भरतराम रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

R. O. No. D16017/24

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०८/२०२४ प्रेषण तिथि ३०/०८/२०२४ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

R. O. No. D16017/24

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी